वाट्सऐप @ 94140-78380, 92140-78380 | वर्ष :3 अंक : 151 गुरुवार 28 सितम्बर 2023 | दैनिक ई-पेपर

शाबाश इंडिया

@ShabaasIndia | प्लॉट नंबर 8, ओझा जी का बाग, गांधी नगर मोड, टोंक रोड, जयपुर

मिशन-2030 पर जनता से सीधी बात करेंगे गहलोत

9 दिन में 18 जिलों में करेंगे सभाएं; खाटूश्यामजी और सालासर से की देव-दर्शन की शुरूआत

जयपुर. कासं

मुख्यमंत्री अशोक गहलोत ने मिशन 2030 पर सभा-संवाद और देव दर्शन कार्यक्रम की शुरूआत कर दी है। मिशन 2030 पर गहलोत जनता से सीधी बात करेंगे। राजधानी जयपुर के बिड़ला ऑडिटोरियम से सीएम अशोक गहलोत ने मिशन 2030 पर इसकी शुरूआत कर दी है। उन्होंने ज्वेलर्स, रत्न विक्रेताओं, ज्योतिषियों और कारीगरों से संवाद किया। गहलोत आचार संहिता लगने से पहले 18 जिलों में सभाएं और देव दर्शन करेंगे। सीएम ने आज से देव दर्शन की शुरूआत भी कर दी है। जयपुर और चौमूं में मिशन 2030 की सभाओं के बाद गहलोत ने खाटूश्यामजी और सालासर जाकर दर्शन किए और पूजा अर्चना की। विधानसभा चुनावों से ठीक पहले गहलोत की देव दर्शन यात्रा को काफी अहम माना जा रहा है।

गहलोत 18 जिलों में मिशन 2030 की सभाएं करेंगे

सीएम अशोक गहलोत का जिलों में जाकर सभाएं करने और मंदिर में दर्शन करने का 9 दिन का कार्यक्रम तैयार किया गया है। वे सीकर, चूरू, नागौर, हनुमानगढ़, श्रीगंगानगर, बीकानेर, जैसलमेर, बाड़मेर, उदयपुर, राजसमंद, चित्तौड़गढ़, बांसवाड़ा, डूंगरपुर, जोधपुर, पाली, जालोर, सिरोही जिले में मिशन 2030 की सभा के साथ देव दर्शन करेंगे। 27 से 30 सितंबर और 3 अक्टूबर से 7 अक्टूबर तक गहलोत लगातार दौरे करेंगे।

बीकानेर में युवाओं के साथ टाउन हॉल करेंगे गहलोत

गहलोत का 28 सितंबर को सीकर के लक्ष्मणगढ़, नागौर के डीडवाना और नागौर में सभा का कार्यक्रम है। 29 सितंबर को हनुमानगढ़, श्रीगंगानगर, बीकानेर में संवाद सभाएं रखी है। बीकानेर में दो होटल में युवाओं के साथ टाउन हॉल भी रखा गया है। हनुमानगढ़ और श्रीगंगानगर में किसानों से संवाद होगा। बीकानेर में भुजिया कारोबारियों से संवाद कार्यक्रम रखा गया है। 30 सितंबर को बीकानेर और जैसलमेर में संवाद करेंगे। जैसलमेर में होटल कारोबारियों से बातचीत करेंगे।

इन प्रसिद्ध मंदिरों में दर्शन करेंगे गहलोत

गहलोत जिलों के दौरों में मिशन 2030 की सभाएं करने के साथ प्रसिद्ध मंदिरों में दर्शन और पूजा-पाठ करेंगे। बुधवार को खाटू श्यामजी और सालासर बालाजी के दर्शन के बाद आने वाले दिनों में गहलोत देशनोक में करणी माता मंदिर, बांसवाड़ा के त्रिपुरा सुंदरी मंदिर, राजसमंद के चारभुजा नाथ मंदिर, नागौर जिले के खरनाल में तेजाजी मंदिर, नाथद्वारा श्रीनाथ जी मंदिर, कल्लाजी मंदिर निंबाहेड़ा में दर्शन करेंगे। गहलोत का 3 अक्टूबर को कांकरोली, नाथद्वारा और उदयपुर का दौरा प्रस्तावित है। कांकरोली में मार्बल कारोबारियों और नाथद्वारा में पिछवाई पेंटिंग से जुड़े कलाकारों और कारोबारियों से मिलकर सुझाव लेंगे। दोनों ही जगह सभा रखी है। उदयपुर में गहलोत टूरिज्म इंडस्ट्री से जुड़े हुए लोगों के साथ संवाद करेंगे।

आदिवासियों के बीच जाकर सुझाव लेंगे

गहलोत ने आदिवासी इलाकों में भी जाकर आदिवासी नेताओं और पशुपालकों से मिलकर मिशन 2030 पर सुझाव लेने का कार्यक्रम रखा है। 4 अक्टूबर को गहलोत का बेणेश्वर धाम में आदिवासी नेताओं के साथ चर्चा का कार्यक्रम है। डूंगरपुर कॉलेज में इसी दिन गहलोत आदिवासी खिलाड़ियों से चर्चा करेंगे। बांसवाड़ा में सभा रखी है। गहलोत का 5 अक्टूबर को निंबाहेड़ा, चित्तौड़गढ़ में मार्बल, ग्रेनाइट और सीमेंट उद्योग से जुड़े लोगों के साथ चर्चा का कार्यक्रम है। 6 अक्टूबर को गहलोत का रणकपुर, सुमेरपुर, जालोर और सिरोही में मिशन 2030 की सभाओं का कार्यक्रम है। सिरोही में 6 अक्टूबर को पशुपालकों से संवाद करेंगे। सीएम का 7 अक्टूबर को बाड़मेर जिले का दौरा प्रस्तावित है। बाड़मेर के सिवाना में पशुपालकों से बातचीत करेंगे। इसके बाद पचपदरा रिफाइनरी प्रोजेक्ट में काम कर रहे युवाओं से चर्चा करेंगे।

हाउसिंग बोर्ड मुख्यालय पर कर्मचारियों का हंगामा

1 हजार करोड़ रुपए ट्रांसफर करने का विरोध; 3 अक्टूबर से क्रमिक अनशन की चेतावनी

जयपुर. कासं

राजस्थान हाउसिंग बोर्ड मुख्यालय पर बुधवार दोपहर बाद कर्मचारियों ने हंगामा किया। राजस्थान आवासन बोर्ड कर्मचारी संघ के पदाधिकारियों के नेतृत्व में मुख्यालय पर तमाम कर्मचारियों ने सरकार और बोर्ड प्रशासन के खिलाफ नारेबाजी। सरकार जो 1 हजार करोड़ रुपए हाउसिंग बोर्ड के खाते से आरएसपीएफ एंड एफएससीएल में जमा कराना चाहती है, उसके विरोध में ये प्रदर्शन किया। संघ के प्रदेशाध्यक्ष दशरथ कुमार और महामंत्री प्रदीप शर्मा ने बताया कि मंडल की वर्तमान में 2600 करोड़ रुपए की देनदारियां हैं और मंडल कोष में मात्र 1600 करोड़ रुपए जमा है। इसके बावजूद भी राज्य सरकार मंडल कोष से 1000 करोड़ रुपए जबरन लेकर आरएसपीएफ एंड एफएससीएल में जमा कराना चाहती है। संघर्ष समिति के संयोजक रमेश चन्द शर्मा और संयुक्त महासचिव गोविन्द नाटाणी ने बताया कि कर्मचारियों ने मुख्यालय ही नहीं बल्कि प्रदेशभर स्थिति सभी सर्किल और डिविजन ऑफिसों में गेट मीटिंग कर सरकार के इस निर्णय का विरोध जताया है। उसके बाद भी सरकार हठधर्मिता कर रही है। संघ के कार्यकारी अध्यक्ष भगवती प्रसाद ने बताया कि सरकार ने सिटी पार्क के लिए जयपुर में बोर्ड की करोड़ों रुपए कीमत की जमीन ले ली, लेकिन उसके बाद अब तक न तो एक रुपए बोर्ड को दिए और न ही उसके बदले किसी दूसरी जगह इस कीमत की जमीन उपलब्ध करवाई। उन्होंने कहा कि अगर सरकार ऐसे ही हठधर्मिता करती रही तो बोर्ड के जल्दी ताले लग जाएंगे।

संत शिरोमणि दिगम्बराचार्य
श्री 108 विद्यासागर जी महाराज
निर्यापक श्रमण
मुनिपुंगव श्री 108
सुधासागरजी
महाराज
परम पूज्य निर्यापक श्रमण मुनि पुंगव श्री सुधासागर जी महाराज
41 वाँ दीक्षा दिवस
आगरा
रविवार, दिनांक 1 अक्टूबर, 2023
दोपहर 12.15 बजे से
आओ करें गुरु वन्दना
चले जयपुर से आगरा
स्पेशल डिलक्स एसी बसों द्वारा जयपुर की विभिन्न शहर एवं कॉलोनियों से
दिनांक 1 अक्टूबर, 2023
प्रात: 5.00 बजे - जयपुर से प्रस्थान
सायं 7.30 बजे - आगरा से वापसी
सहयोग राशि : 200/- प्रति सवारी
बस पुण्यार्जक..
• श्री नन्दकिशोर जी महावीरजी प्रमोद जी पहाड़िया
• श्री उत्तम जी पाटनी
• श्री सम्पत जी संजय जी अजय जी पाण्ड्या (श्री जैन रोड़वेज)
• श्री अजय जी विजय जी संजय जी कटारिया
• श्री जम्बू कुमार जी दर्शन जी नवीन जी जैन बस्सीवाले
• श्री शैलेन्द्र जी गोधा (समाचार जगत)
• श्री मोहित जी राणा
संयोजक... • श्री प्रदीप जी लुहाड़िया
• श्री विनोद जी छाबड़ा 'मोनू'
निवेदक :
सकल दिगम्बर जैन समाज
जयपुर
: सीट बुकिंग हेतु सम्पर्क करें :
महावीर जैन (महावीर यात्रा कम्पनी)
94147-81315 / 98299-99436
अन्तिम तिथि : दिनांक 29 सितम्बर, 2023
जे.के.जैन (केवल मानसरोवर हेतु) 94140-42294

उत्तम ब्रह्मचर्य धर्म: अनंत चतुर्दशी

अपने आत्म स्वरूप में रमण करना उत्तम ब्रह्मचर्य धर्म है भाद्रपद मास, शुक्ल पक्ष की चतुर्दशी को दिगंबर जैन समाज के पर्वाधिराज दशलक्षण पर्व का दसवां दिन होता है जिसे अनंत चतुर्दशी के रूप में मनाया जाता है ।अध्यात्म-मार्ग में ब्रह्मचर्य को सर्वश्रेष्ठ माना गया है , क्योंकि सही मायने में वही मोक्ष मार्ग है। धर्म का सार है । 'ब्रह्म' यानि 'आत्मा' और 'चर्या' यानि 'रमण करना' अर्थात् ब्रह्मचर्य शब्द का अर्थ होता है, ब्रह्म जैसी चर्या । उत्तम ब्रह्मचर्य व्रत में सब प्रकार के राग– द्वेष का त्याग कर स्वयं में, आत्म स्वरूप में रमण करना और अपनी आत्मा का साक्षात्कार करना यह मुख्य लक्ष्य होता हैं । इसे 'अणुव्रत' और 'महाव्रत' दोनों ही रूप से ग्रहण किया जा सकता है। 'उत्तम-ब्रह्मचर्य' तो दिगम्बर भावलिंगी-मुनियों को ही होता है। श्रावकों को इसे अणुव्रत के रूप में अपना सकते है ।वास्तव में संसार में जितनी बुराइयां हैं, वे काम वासना से उत्पन्न होती हैं, इसके विपरीत सम्पूर्ण प्रकार के सद्गुण ब्रह्मचर्य से प्राप्त होते हैं। भारत ऋषि मुनियों की तपोभूमि मानी जाती है । इसी ब्रह्मचर्य के प्रभाव से पूर्व समय में भारत धन, बल, विद्या, कला,सौंदर्य आदि में उत्कृष्ट था । आज इसी पवित्र ब्रह्मचर्य के विघटन से यह देश विपत्तियों, रोगों से घिरा रहता है ।एक सोच के अनुसार कामेंद्रीय का विषय अन्य इन्द्रियों के विषयों से अत्यन्त प्रबल होता है और अन्य इन्द्रियों के विषय भी इसी में विलीन हो जाते हैं । इसलिये इससे विरक्त होने को ही ब्रह्मचर्य कहा है। ब्रह्मचर्य शब्द की व्याख्या विस्तृत रुप में की जा सकती है। लेकिन तथाकथित नीतिज्ञों ने इसकी संकुचित व्याख्या करके इसे विकृत अर्थ में भी प्रयुक्त किया है। जब भी कोई ब्रह्मचर्य शब्द का उल्लेख करता है तो सामान्य व्यक्तियों के साथ तपस्वियों द्वारा भी इसका अर्थ कामवासना पर नियंत्रण बताया जाता है । कामवासना पर नियंत्रण बहुत तुच्छ और साधारण सी बात है। ब्रह्मचर्य शब्द का अर्थ होता है, ब्रह्म जैसी चर्या। ब्रह्मचर्य बहुत विराट शब्द है और कामवासना का नियंत्रण अति क्षुद्र और साधारण सी बात है। ऐसे जीना कि जैसे परमात्मा ही जी रहा हो। अगर परमात्मा की कोई चर्या होगी, तो वैसी ही चर्या संत की होगी । परम संन्यासी परमात्मा को अपनी आत्मा में विराजमान कर लेता है एवम यह समझ लेता है कि उसका जो भी है, वह सब परमात्मा का है। ऐसे अपने भीतर परमात्मा को जिसने प्रतिष्ठित किया हो, जो परमात्मा का मंदिर ही बन गया हो, उसके आचरण का नाम ब्रह्मचर्य है। निश्चित ही, उसमें काम—वासना नियंत्रण तो आ ही जाता है। उसकी चर्चा करने की भी कोई जरूरत नहीं रह जाती। लेकिन ब्रह्मचर्य मात्र काम—नियंत्रण नहीं है, काम—नियंत्रण एक छोटा सा अंग है, ब्रह्मचर्य अनाश्य संपदा है। यह परमात्मा का

आभास कराता है । जिसने यह अनुभव कर लिया कि मेरे भीतर परमात्मा है, उससे अब कुछ भी छीना या अलग नहीं किया जा सकता । माता -पिता, पत्नी, बेटा, मित्र, सब हमसे अलग किए जा सकते हैं, लेकिन परमात्मा रूपी सत्व को अलग नहीं किया जा सकता है । यद्यपि यह काम (वासना) अत्यन्त प्रबल है और तीन लोक के जीव इसके वशीभूत रहते है तथापि यह अजेय नहीं है एवम पुरषार्थियो पर इसका कोई असर नहीं होता है।श्री नेमिनाथ भगवान ने दीन जीवों को दुःखी देखकर ही सांसारिक विषयों कों छोड़ दिया था एवं सती राजुल के साथ विवाह होते होते रह गया, ब्रह्मचर्य जीवन ही व्यतीत किया ।अन्तिम केवली श्री जम्बूस्वामी ने विवाह के तुरंत बाद ही चारों पत्नियों के साथ ही अपने अखण्ड ब्रह्मचर्य का पालन करते हुए प्रातःकाल दीक्षा ले ली थी ।भगवान ऋषभदेव की दोनों पुत्रियां-ब्राह्मी और सुन्दरी किशोर अवस्था में ही संसार को त्याग कर दीक्षित हुई थी।सीता को रावणने कितना भय. दिखाया, परन्तु धन्य वह वीरांगना, जिसने शीलव्रत का पालन निश्चय पूर्वक किया ।भीष्म पितामह ने अपने पिता को दिए वचन से आजन्म अखण्ड ब्रह्मचर्य पालन किया था।पंच बालयती तीर्थंकर वासुपूज्य, मल्लीनाथ, नेमीनाथ, पार्श्वनाथ, महावीर स्वामी ने काम को स्वयं पर प्रबल नहीं होने दिया । ऐसे दृढ़ व्रत को उत्तम ब्रह्मचर्य कहते है ।सच्चा ब्रह्मचारी कौन हैं?जो उत्तम पुरुष हैं, वे कभी कुत्सित कार्य में रत नहीं होते हैं। वे सोचते हैं कि यह शरीर जो सुन्दर सुकोमल दिखता है, इसके भीतर अस्थि, मांस, रुधिर, पीव, नशा, मल, मूत्र, पसीना, शुक्र आदि घृणित पदार्थ भरे हुए है। ऊपर से केवल चमड़े की चादर लिपट रही है, जो सब कमियों को ढांके हुए है। जो शरीर को मल का भंडार देखता हुआ जो काम से विरत होता हैं, वही सच्चा ब्रह्मचारी होता हैं । हमारी पूजन में कहा भी गया है कि 'दीपे चाम चादर मडी हाड पिंजरा देह, भीतर या सम जगत में और नहीं घिन गेह ।'जिस दिन हमारे भीतर में यह बात समझ में आ जाएगी, उस दिन हमे फिर किसी के प्रति आकर्षण नहीं होगा ।हमें विचार करना चाहिए की जैसे जल का स्वभाव पूर्ण-निर्मल है , परन्तु फिर भी चंदनादि सुगंधित- पदार्थ के संपर्क में आने पर 'शोभनीय' और कीचड़-गंदगी आदि के संपर्क में आने पर 'अशोभनीय' संज्ञा पाता है। उसी प्रकार जीव के परिणामों में अंतर आता है तो उसके कर्म-बंधन में भी अंतर आता है।स्त्री-पुरुष, विवाह के बंधन में बंध कर पति-पत्नी के मधुर संबंध से जुड़े और उसके उपरांत स्त्री-पुरुष का पति-पत्नी के अतिरिक्त संसार के हर स्त्री के प्रति मां, बहन और बेटी जैसी पवित्र दृष्टि हो। हर पुरुष के प्रति पिता, पुत्र, भाई जैसा पवित्र दृष्टिकोण हो, यही ब्रह्मचर्य मार्ग हैं, इसी का नाम स्वधार-संतोष व्रत हैं ।वास्तव में देखा जाये, तो जिसका शील सुरक्षित है, उसके सब व्रतादिक 'सहज' और 'कार्यकारी' हैं। और जिसका शील सुरक्षित नहीं है, उसके व्रत-तप आदि सब सारहीन है ।जिस प्रकार जब तक कोई संख्या न लिखी जाए केवल शून्य ही लिखे जाएँ तो उनकी कोई गणना नहीं होती, लेकिन जब कोई अंक लिखकर शून्य लिखते हैं तो संख्या बन जाती है एवम कई गुना मान बढ़ जाता है, उसी प्रकार ब्रह्मचर्य व्रत के बिना अन्य सभी व्रत शून्य के समान सारहीन समझना चाहिए । ब्रह्मचारी सदा शुचि पवित्र होता है, वह सर्वत्र पूज्य है । जीवदया , इन्द्रियदमन, सत्य, अचौर्य, ब्रह्मचर्य , सम्यग्दर्शन, ज्ञान, तप— ये सब 'शील का परिवार' है। सभी इस शील के परिवार के सदस्य बनकर 'उत्तम- ब्रह्मचर्य-धर्म' को धारण का सकते है । हमारे जीवन में ब्रह्मचर्य धर्म का, हमारे चरित्र का बहुत महत्व हैं । कहा गया है कि -यदि धन खो गया, तो कुछ भी नहीं खोया;यदि स्वास्थ्य खो गया, तो कुछ खो गया;लेकिन यदि हमने चरित्र खो दिया तो सब कुछ खो गया।If money is lost, nothing is lost;If health is lost, something is lost;But if character is lost, everything is lost.इसलिये सच्चे सुखाभिलाषी जीव सदा उत्तम ब्रह्मचर्य व्रत धारण करते है।

संकलन
भागचंद जैन मित्रपुरा
अध्यक्ष, अखिल भारतीय जैन बैंकर्स फोरम, जयपुर।

हार्दिक श्रद्धांजलि

श्रीमती सुशीला जी कासलीवाल

धर्मपत्नी श्री सुरेश जी कासलीवाल
(महामंत्री श्रमण संस्कृति संस्थान, सांगानेर)

श्रद्धांवत

संरक्षक : राकेश गोदिका, अध्यक्ष : सुनील जैन,
वरिष्ठ उपाध्यक्ष : विमल जैन, उपाध्यक्ष : संजय जैन 'आवा',
उपाध्यक्ष : साकेत जैन, मंत्री : राजेंद्र बाकलीवाल,
सयुक्त मंत्री : अशोक सेठी, सयुक्त मंत्री : अनिल जैन,
कोषाध्यक्ष : मुकेश जैन,
कार्यकारिणी सदस्य : टीकम जैन, अशोक सोगानी, राजेंद्र जैन बोरखंडी
एवम समस्त सदस्य आदिनाथ मित्र मंडल, जयपुर

वेद ज्ञान

सूर्य का संदेश

सूर्य का संदेशसूर्य का संदेशसूर्य ऋग्वेदकाल से ही महत्वपूर्ण देवता रहे हैं। जीवन, पर्यावरण के लिए सूर्य ही मुख्य आधार हैं। सूर्य ऋग्वेदकाल से ही महत्वपूर्ण देवता रहे हैं। जीवन, पर्यावरण के लिए सूर्य ही मुख्य आधार हैं। लोक जीवन में सूर्य हमारे घरेलू मित्र, सखा, देवता सब कुछ हैं। छठ के समय का सूर्य तो अत्यंत आकर्षक है-कड़े ताप से रहित। अनेक ध्वजों पर सूर्य के चिह्न देखे जा सकते हैं। कोई देवता हमारे लोक का साथी यों ही नहीं बन जाता। वह हमारे दुख-सुख का साथी होता है। सूर्य हमें ऊष्मा देते हैं, रंग देते हैं। सूर्य के ताप के माध्यम से ऊर्जा का संचय किया जाता है, ताकि शरीर सर्दी में स्वस्थ रहे। सुबह, दोपहर और सायं-इन तीन समय सूर्य विशेष रूप से प्रभावी होते हैं। प्रातःकाल सूर्य की आराधना से हम जीवन को रहने योग्य बनाते हैं। जो किरणें हमारी मनुष्यता से परावर्तित होती हैं वही आलोक रचती हैं। सूर्य की रोशनी हमारे भीतर के उत्सव की संज्ञा है। सूर्य सबका हैः हर धर्म, जाति, संप्रदाय, भाषा, क्षेत्र, देश का। प्रकृति को अर्थ देने का कार्य सूर्य का है। छठ पर हम नदी या तालाब या समुद्र में घुटने पानी तक खड़े होकर साधनापूर्वक उन्हें नमन करते हैं। अपनी श्रद्धा देते हैं। एक तरह से यह श्रद्धा हम अपने को ही देते हैं। श्रद्धा रहित जीवन भी कोई जीवन है। चढ़ते और उतरते सूर्य दोनों को प्रणाम करने का अर्थ है हम सम भाव से किसी के उत्कर्ष और अपकर्ष में साथ बने रहते हैं। संसार की रचना जल-थल-नभ के दुर्लभ संयोग से संभव हुई है। शरीर में जल का हिस्सा बहुतायत में है। जल को शुद्ध बनाए रखना आवश्यक है। उपासना के समय या उसके बाद नदियों-तालाबों-समुद्र को प्रदूषित करना उपासना के विरुद्ध कार्य है। यह वैज्ञानिकता हमारे भीतर होनी चाहिए कि जो हम पृथ्वी को देते हैं पृथ्वी वही हमको देती है। हमें स्वच्छ, स्वस्थ और मंगलमय पृथ्वी रचनी चाहिए। सूर्य के रंग न केवल बाहरी रंग हैं, अपितु हमारे भीतरी रंग भी हैं। छठ लोक का पर्व इसीलिए है, क्योंकि इसमें हमारी लय, हमारी संस्कृति, हमारे लोक गीत, हमारे संदर्भ, हमारी सभ्यता जुड़ी है। इसीलिए यह हमारी अस्मिता भी बन गया है। पर्वों का अस्मितागत परिवर्तन एक सामाजिक और चेतनागत प्रक्रिया है। इससे हमारे समाजों में गतिशीलता आती है। वे परिवर्तन के कारक बन जाते हैं। पर्व साहित्य-कलाओं का उन्नयन करने वाले होने चाहिए।

संपादकीय

कमजोर देशों की तरक्की में बाधा की नीति...

यह छिपी बात नहीं है कि दुनिया के संपन्न देश कमजोर देशों की तरक्की में बाधा बनते रहे हैं। उन्होंने हर वैश्विक मामले में अपना दबदबा कायम कर रखा है। इसकी वजह से दुनिया में कई तरह के असंतुलन दिखाई देते हैं। भारतीय विदेशमंत्री एस जयशंकर ने एक बार फिर यह बात दोहराई कि जो देश प्रभावशाली स्थिति में हैं, वे बदलाव का विरोध करते हैं। जयशंकर अनेक मंचों पर पश्चिम के दोहरे रवैये पर खुल कर बोल चुके हैं। इस बार उन्होंने संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद और अन्य मंचों का हवाला देते हुए कहा कि वैश्विक उत्तर के देश बदलाव के पक्ष में नहीं दिखते। जिनका आर्थिक प्रभुत्व है, वे अपनी उत्पादन क्षमता का लाभ उठा रहे हैं और जिनके पास संस्थागत शक्ति है, वे कई तरह की क्षमताओं का हथियार के रूप में इस्तेमाल कर रहे हैं। इस तरह वैश्विक दक्षिण के देश अपनी क्षमताओं का पूरी तरह प्रदर्शन नहीं कर पा रहे। वैश्विक उत्तर का अर्थ उन संपन्न देशों से है जिनमें उत्तरी अमेरिका,

यूरोप, इजराइल, जापान, आस्ट्रेलिया, दक्षिण कोरिया और न्यूजीलैंड शामिल हैं। दक्षिण देशों में मुख्य रूप से एशिया और लातिनी अमेरिका के देश शुमार हैं, जिन्हें विकासशील देश कहा जाता है। इनमें भारत अगुआ है। हालांकि वैश्विक उत्तर के देश वैश्विक दक्षिण के देशों की क्षमताओं से अपरिचित नहीं हैं। जब उन्हें लगने लगा कि बदलती वैश्विक अर्थव्यवस्था में विकासशील कहे जाने वाले देशों को अलग-थलग रख कर विकास की इबारत नहीं लिखी जा सकती, तब उन्होंने जी-7 का विस्तार करते हुए जी-20 का गठन किया था। इस बार दिल्ली में हुए जी-20 के शिखर सम्मेलन में अफ्रीकी संघ को भी शामिल कर लिया गया। इस मौके पर दावा किया गया कि वैश्विक दक्षिण के देश ही आने वाले वक्त में वैश्विक अर्थव्यवस्था की नई तस्वीर खींचेंगे। मगर इन देशों के पास बड़ा बाजार, सस्ता श्रम और उत्पादन की विशाल संभावनाएं होने के बावजूद विकसित कहे जाने वाले देशों के दोहरे रवैये की वजह से अपना पूरा योगदान देने में सक्षम नहीं हो पा रहे। विकसित देशों के हाथ में संयुक्त राष्ट्र की कमान है। सुरक्षा परिषद का विस्तार वे करना नहीं चाहते, इस तरह वे अपने निहित स्वार्थों के मुताबिक कमजोर देशों को दबाए रखने में सफल हो जाते हैं। पिछले दिनों प्रधानमंत्री ने भी सुरक्षा परिषद में विस्तार की जरूरत रेखांकित की थी, पहले भी कई मौकों पर वे यह बात कह चुके हैं, मगर उसके स्थायी सदस्य नियम-कायदों में कोई बदलाव नहीं करना चाहते। दुनिया के सामने कई नए खतरे पैदा हो रहे हैं। सबसे भयावह तो जलवायु परिवर्तन की वजह से पैदा खतरा है। हर साल जलवायु परिवर्तन पर सम्मेलन होता है, उसमें कार्बन उत्सर्जन में कमी लाने के संकल्प दोहराए जाते हैं, मगर विकसित देश खुद इसे लेकर गंभीर नजर नहीं आते। पिछली बार कार्बन उत्सर्जन करने वाले देशों पर मुआवजे का प्रस्ताव आया, तो वे उस पर चुप्पी साध गए। मगर जहां भी विकासशील देशों में कार्बन उत्सर्जन रोकने की बात आती है, तो उनका दबाव बढ़ जाता है। वे विकासशील देशों में अपने उत्पाद के लिए बाजार का विस्तार तो करना चाहते हैं, मगर उन्हें उनके हितों की कतई परवाह नहीं। **-राकेश जैन गोदिका**

परिदृश्य

सियासत...

साठ के दशक में ब्रिटिश सरकार एक सनसनीखेज स्कैंडल से हिल उठी। युद्ध के लिए मंत्री (दूसरे शब्दों में कहें तो रक्षा मंत्री) जॉन प्रोफ्यूमो क्रिस्टीन कीलोर नाम की मॉडल के साथ दोस्ताना थे और इस मॉडल की सोवियत नौसेना के अताशे कमांडर वैलेरी इवानोव से दोस्ती थी। कीलोर की प्रोफ्यूमो से पहली मुलाकात सत्तारूढ़ पार्टी के एक अन्य राजनेता लॉर्ड एस्टर के घर पर हुई। उसकी मैंडी राइस डेवीज से भी दोस्ती थी। मैंडी भी एक मॉडल थी जिसके साथ वह रहने की जगह यानी क्वार्टर शेयर करती थी। मैंडी के लॉर्ड एस्टर के साथ दोस्ताना ताल्लुक थे लेकिन ये सब आरामदेह दोस्तियां तब सबके सामने आ गई जब ब्रिटिश खुफिया तंत्र ने इन संपर्कों को गैर-जरूरी बताया। राइस डेवीज और कीलोर के अकाउंटेंट स्टीफन वार्ड को जेल भेज दिया गया। उन पर वेश्यावृत्ति की कमाई पर निर्भर रहने का आरोप लगाया गया। स्टीफन के मुकदमे के दौरान गवाही के घेरे से राइस डेवीज ने एस्टर के साथ संबंधों का दावा किया लेकिन एस्टर ने इससे इनकार किया। राइस का जवाब बड़प्पन जैसा थाः हां, वह इससे इनकार करेंगे। नहीं करेंगे क्या? हाल में जब भारत और कनाडा के बीच राजनयिक विवाद ने तूल पकड़ा तो मुझे इस किस्से की याद आई। कनाडा के आरोप सच हैं या नहीं, भारत के पास इनका आधिकारिक तौर पर खंडन करने के सिवा कोई चारा नहीं था। साथ ही यह भी महत्त्वपूर्ण है कि भारत और कनाडा के बीच लंबे समय से मौजूद संबंधों को देखते हुए कनाडाई बिना किसी सबूत के, जिसके बारे में उनका मानना है कि वह मजबूत है, इस तरह का सार्वजनिक आरोप नहीं लगाते। ताजा खबरों में दावा किया गया है कि कनाडा ने आरोप लगाते समय मानवीय और इलेक्ट्रॉनिक दोनों तरह के सबूत पेश किए। आरोपों और खंडन को दरकिनार करके देखें तो घरेलू राजनीतिक और भू-राजनीतिक मजबूरियां बेहद दिलचस्प हैं। कोई भी देश इसे पसंद नहीं करता कि दूसरा देश उसकी सार्वभौमिक हैसियत की उपेक्षा करके उसके किसी एक नागरिक को निशाना बनाए और गैर-कानूनी तरीके से उसकी हत्या कर दे। इसके साथ यह भी सच है कि कोई भी देश आधिकारिक तौर पर इसे स्वीकार नहीं करेगा कि उसने ऐसी किसी कार्रवाई को अंजाम दिया है, भले ही उसने हकीकत में ऐसा किया हो या नहीं। ये हालात दशकों से सुलग रहे थे। दोनों देशों की गहरी घरेलू मजबूरियां हैं जिनके कारण यह गतिरोध बना। भारत कनाडा पर लगातार यह आरोप लगाता रहा है कि वह खालिस्तानी आतंकवादियों और उनसे हमदर्दी रखने वालों को शरण देता है। कनाडा अभिव्यक्ति की आजादी के अपने कानून का हवाला देता है और कहता है कि भारत सीधे-सीधे यह मांग नहीं कर सकता कि कनाडाई नागरिकों को खालिस्तान समर्थक भावनाएं जाहिर करने से रोका जाए। भारत ने करीब 20 कनाडाई लोगों के प्रत्यर्पण का अनुरोध कर रखा है जिनके बारे में उसका आरोप है कि वे खालिस्तानी हैं (निंजा के अलावा) जबकि दोनों देशों के बीच प्रत्यर्पण संधि है। लेकिन भारत कनाडा की अदालत को इनके प्रत्यर्पण का आदेश देने के लिए तैयार नहीं कर सका। समुदाय की आबादी के आंकड़े संकेत देते हैं कि भारत की तुलना में कनाडाई आबादी में सिखों का ज्यादा बड़ा प्रतिशत है। वर्ष 2011 की जनगणना के अनुसार भारत की कुल आबादी 1.21 अरब में लगभग 2.1 करोड़ सिख थे जो देश की कुल आबादी का 1.7 फीसदी थे। सिख समुदाय की घटती कुल प्रजनन दर को देखते-हुए बहुत संभव है कि इस प्रतिशत में और कमी आई हो।

चित्रकूट कॉलोनी में दश लक्षण विधान का आयोजन

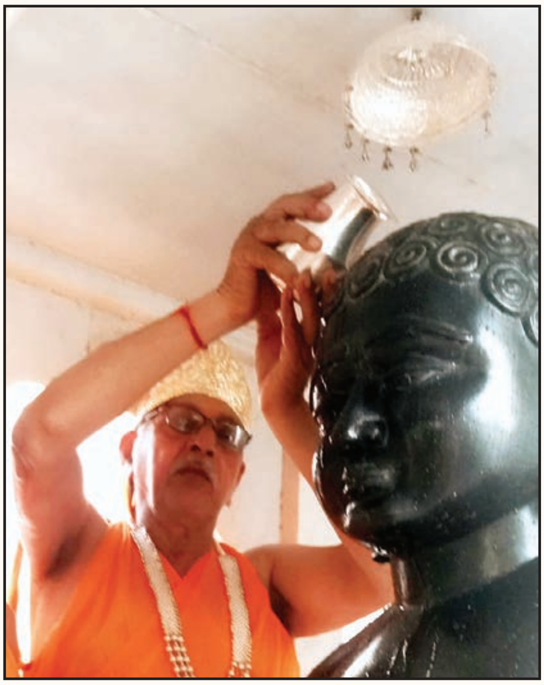

जयपुर. शाबाश इंडिया। सांगानेर चित्रकूट कॉलोनी में चल रहे दस लक्षण पर्व विधान में प्रथम बार विधान स्थल पर विशेष शांतिधारा करवाई गई ।तीनों प्रतिमा पर एक साथ शांतिधारा हुई ।उनमें पद्मासन प्रतिमा आदिनाथ भगवान और खड्गासन प्रतिमा मुनिसुवर्त नाथ भगवान और पारसनाथ भगवान की शांतिधारा करवाई गई । मंदिर के अध्यक्ष केवलचन्द जैन मंत्री अनिल जैन काशीपुरा मीडिया प्रभारी दीपक जैन पहाड़िया ने बताया कि महोत्सव का समापन 29 सितम्बर को प्रातःकाल श्रीजी की चांदी की पालकी शोभायात्रा के साथ होगा।

जैन मंदिर जी वास गोधान में भक्तामर अनुष्ठान का हुआ आयोजन

जयपुर. शाबाश इंडिया

श्री 1008 पार्श्वनाथ दिगंबर जैन मंदिर जी वास गोधान, गोधों का चौक, हल्दियों के रास्ते में भक्तामर स्तोत्र का पाठ बहुत ही भक्ति भाव से आयोजित किया गया। संयोजक सुधीर - अलका गोधा ने बताया की स्व.श्री रमेश चंद - चंचला देवी एवम्पौत्र गौरव जैन गोधा की स्मृति में परिवार के द्वारा यह कार्यक्रम आयोजित किया गया। गायक कलाकार अशोक गंगवाल, सुभाष बज पार्टी के द्वारा संगीत के साथ गोधों का चौक निवासी व परिवारजनों के द्वारा भक्ति पूर्वक नृत्य करते हुए 48 दीपकों द्वारा भक्तामर पाठ किया गया। सुधीर गोधा के अनुसार हर साल की भांति इस वर्ष भी दसलक्षण पर्व धूम-धाम से मनाया जा रहा है व प्रतिदिन 3 व्यक्तियों को फोन उठाते ही जयजिनेंद्र बोलने पर पुरस्कृत किया जाता है। कार्यक्रम के अंत में तीन लक्की ड्रा के पुरस्कार भी अलका-सुधीर गोधा द्वारा दिए गए।

श्रद्धांजलि सभा

अत्यंत दुख के साथ सूचित किया जाता है कि हमारी प्रिय

श्रीमती सुशीला कासलीवाल

का निधन दिनांक 26/09/2023 को हो गया है। जिनकी श्रद्धांजलि सभा दिनांक 29/09/2023 शुक्रवार को प्रात: 10 बजे संघी जी जैन मंदिर सांगानेर में रखी गई है।

शोकाकुल: श्रीमती सूर्यकान्ता (जेठानी), सुरेश कासलीवाल (पति), कमलेश- प्रेमलता, प्रकाश -अनिता, सुनील-राजुल, आशीष-पल्लवी, अनुराग (भतीजे) सुदीप - कीर्तिका (पुत्र-पुत्रवधु) चन्द्रेश- वर्षा, प्रियांक-रितिका, पराग - मयंका, अनुराग-अंशुमा, सूर्यांश, विरल, हितांशी, पाखी, यथार्थ कासलीवाल (पौत्र-पोत्री) किरण- सुधीर बिलाला, सुनीता बड़जात्या, दीपा- अनुराग बाकलीवाल (भतीजी - दामाद) सुचित्रा - सन्दीप(बंटी) बड़जात्या (पुत्री-दामाद) रिशिता, जेशिता बड़जात्या (दोहिती) ,प्रीति - सौरभ बाकलीवाल(पोत्री- दामाद) पीहर पक्ष:- पदमचंद- सज्जन देवी, विमल चंद , विनोद - सरिता, प्रकाश- अनिता पाटनी ब्यावर

जैन मन्दिर शांतिनगर में महासती चंदनबाला का सशक्त मंचन

जयपुर. शाबाश इंडिया

चन्द्र प्रभु दि जैन मन्दिर शांतिनगर के महिला मन्डल ने उत्तम त्याग दिवस पर प्रसिद्ध जैन पौराणिक कथा महासति चन्दनबाला का सशक्त मंचन किया गया । महिला मंडल की अध्यक्ष अरुण छाबड़ा ने बताया कि महासती चन्दन बाला अनेक कष्ट सहन करती रही, जिसकी हाथो मे हथकडी व बेडिया जकडे होते हये भी भगवान महावीर का आहार हुआ, बाद मे वे भगवान महावीर की प्रमुख शिष्या बनी ' नाटक में पूजा सेठी, साक्षी जैन, अंजलि जैन, नीतू जैन, सोनल जैन, करिश्मा, सुरभि ने मुख्य पात्र निभाते हुए नाटक को ऊंचाइयां दी 'उन्होंने अपने अभिनय से दर्शकों पर अमिट छाप छोड़ी 'इनके अलावा नेहा काला, नेहा जैन, सिद्धि ,सोनल, सुमन, सुरभि ने अपने अभिनय के साथ न्याय किया है। नाटक का निर्दशन अनिल मारवाडी व मनोज स्वामी और सहायक निदेशक रेणु रही व प्रकाश व्यवस्था राजेंद्र शर्मा राजू ने किया।

जैन समाज के छात्र-छात्राएं लग्न एवं मेहनत से पढ़ाई करें: विजय कुमार जैन

जैन मिलन द्वारा प्रतिभा सम्मान समारोह आयोजित

राघौगढ़. शाबाश इंडिया

जैन धर्म के पर्यूषण पर्व के पावन अवसर पर जैन मिलन राघौगढ़ द्वारा सिंघई नेमीचंद जैन परमार्थिक ट्रस्ट के सहयोग से 25 वाँ प्रतिभावान सम्मान समारोह आयोजित किया। मुख्य अतिथि भारतीय जैन मिलन के वरिष्ठ राष्ट्रीय उपाध्यक्ष विजय कुमार जैन, विशेष अतिथि राष्ट्रीय संयुक्त मंत्री शीतल चंद कठारी, क्षेत्रीय उपाध्यक्ष अशोक भारिल्य, पूर्व नगर पालिका अध्यक्ष डॉक्टर अजित रावत ट्रस्ट के प्रतिनिधि डाँ लेशांशु जैन थे। पर्युषण पर्व पर बबीना उ प्र से पधारी ब्रम्हचारिणी सरिता दीदी एवं दिल्ली से पधारी शिबिका दीदी विशेष रूप से उपस्थित थी ।अध्यक्षता जैन समाज के अध्यक्ष अजय कुमार रावत ने की। समारोह को संबोधित करते हुए विजय कुमार जैन ने कहा जैन समाज के छात्र-छात्रा लग्न एवं मेहनत से पढ़ाई कर जीवन में उन्नति करें, जैन समाज एवं राघौगढ़ नगर का गौरव बढ़ायें। आपने उल्लेख किया आज से लगभग 35 वर्ष पूर्व सेवानिवृत शिक्षक स्वर्गीय नेमीचंद जैन ने सेवा निवृत्ति के बाद शासन से मिली राशि से सिंघई नेमीचंद जैन पारमार्थिक ट्रस्ट का गठन किया था ।पिछले वर्षों से ट्रस्ट के माध्यम से जैन मिलन राघौगढ़ के तत्वावधान में राघौगढ़ नगर के कक्षा एक से कक्षा 12 तक के प्रतिभावान छात्र-छात्राओं को सम्मानित किया जाता है ।आपने कहा जैन मिलन राघौगढ़ सहयोगी संस्थाओं युवा जैन मिलन,महिला जैन मिलन धार्मिक, पारमार्थिक, सामाजिक

कार्यों में अग्रणी रहकर देश में राघौगढ़ नगर को गौरवान्वित कर रही हैं।

अभी न जाओ छोड़कर के दिल अभी भरा नहीं...पर झूमे श्रोता

जयपुर. शाबाश इंडिया। अंतरराष्ट्रीय वैश्य महासम्मेलन जयपुर जिला व एवरग्रीन देव आनंद सोसायटी के बैनर तले देवानंद की 100वींजयंती पर ''गाता रहे मेरा दिल'' कार्यक्रम राजस्थान इन्टरनेशनल सेंटर में आयाजित हुआ। इस मौके पर देवानंद पर फिल्माए कलाकारों ने अभी न जाओ छोड़कर के दिल अभी भरा नहीं..जैसे एक से बढ़कर एक तराने सुनाकर सभी का मन मोह लिया। कार्यक्रम चेयरमैन रोटेरियन सुधीर जैन गोधा ने बताया कि इस खूबसूरत शाम में गायक आलोक कटधारे ने चूड़ी नही मेरा दिल है..,प्रियंका मित्रा ने गाया कांटो से खींच के ये आंचल..,विश्वनाथ मातूंगे ने खोया खोया चांद..,धर्मेंद्र छाबड़ा ने है अपना दिल तो आवारा.., राजेश शर्मा ने ऐसे न मुझे तुम देखो.. गानों पर दर्शकों की तालिया बटोरी व झूमने को मजबूर कर दिया। उन्होंने बताया कि कार्यक्रम से पूर्व कलानेरी आर्ट गैलरी के स्टूडेंट्स की ओर से लगाई गई प्रदर्शनी का उद्घाटन सभी ऑगेर्नाइजर्स ने किया।इस दौरान आर्च एकेडमी के स्टूडेंट्स ने देवानंद पर आधारित फैशन परेड भी की। को चेयरमैन संजय पाबूवाल, अनु दीक्षित ने बताया कि कार्यक्रम में वरिष्ठ आईपीएस सचिन मित्तल, आईएएस समित शर्मा, प्रिंसिपल सीजीएसटी कमिश्नर चेतन जैन,आयकर आयुक्त शैलेंद्र शर्मा,रिटायर्ड हाई कोर्ट न्यायाधीश दीपक महेश्वरी , मेजर जनरल अनिल माथुर,पूर्व मुख्य सचिव अशोक जैन,राजेंद्र भानावत, पवन गोयल, जेडी महेश्वरी केदार गुप्ता सहित बड़ी संख्या में गण मान्य लोगो ने भाग लिया। संचालन आईपीएस बाबा ने किया।

सीकरी जैन मंदिर में हुई उत्तम त्याग धर्म की पूजा, साथ में जैन अन्त्याक्षरी प्रतियोगिता भी

सीकरी. शाबाश इंडिया। जैन मंदिर में दशलक्षण पर्व के आठवें दिन उत्तम त्याग धर्म मनाया गया। इस अवसर पर सभी जैन धर्मावलंबियों ने बड़े भक्ति भाव से उत्तम त्याग धर्म की पूजन की व शांतिधारा करने का सौभाग्य नेमचंद कमल कुमार जैन परिवार को प्राप्त हुआ। इसके अलावा सोमवार रात्रि में अखिल भारतवर्षीय दिगम्बर जैन युवा परिषद् सीकरी द्वारा जैन अन्त्याक्षरी प्रतियोगिता आयोजित हुई । युवा परिषद् के अध्यक्ष पुष्पेन्द्र जैन ने बताया कि जैन अन्त्याक्षरी प्रतियोगिता में तीन-तीन सदस्यों के पांच ग्रुप अरिहंत, सिद्ध, आचार्य उपाध्याय व साधु नाम से बनाए गए। जिसमें प्रथम स्थान साधु ग्रुप- पायल, सुरभि, योगिता ने, द्वितीय स्थान अरिहंत ग्रुप - निकिता, हर्षित, तनु ने और तृतीय स्थान उपाध्याय ग्रुप - कोमल, नमन, आस्था ने प्राप्त किया। सभी विजेताओं को नरेशचंद दिनेशचंद जैन द्वारा पुरस्कृत किया गया। इस मौके पर अखिल जैन, प्रिंस जैन, रजत जैन, विशेष जैन, अभिषेक जैन , कमल जैन आदि समाज के सभी लोग मौजूद रहे।

30 को निकलेगी जैन रथयात्रा

समाज के मीडिया प्रभारी पुष्पेन्द्र जैन ने बताया कि हर वर्ष की भांति इस वर्ष भी क्षमावाणी पर्व के अवसर पर 30 सितंबर को भव्य रथयात्रा निकाली जाएगी जिसमें जिनेन्द्र प्रभु को रथ में विराजमान कर नगर भ्रमण कराया जाएगा व पलवल का प्रसिद्ध बैण्ड आकर्षण का केंद्र रहेगा।

अपनी इंद्रियों पर नियंत्रण करना ही संयम धर्म हैः डॉक्टर सुरेंद्र जैन

लाडनूं. शाबाश इंडिया

स्थानीय श्री दिगंबर जैन बड़ा मंदिर में दसलक्षण पर्व के आठवें दिन उत्तम संयम धर्म की आराधना की गई। इस अवसर पर जैन दर्शन के मूर्धन्य मनीषी डॉ सुरेंद्र जैन ने उत्तम संयम धर्म को व्याख्यात करते हुए कहा कि अपनी इंद्रियों को नियंत्रित करना ही संयम धर्म है। व्यक्ति क्रोध मान माया लोग के बासी भूत होकर अपने धर्म का निर्वाह करना भूल जाता है।जबकि जैन दर्शन में इन सभी कषायों की परित्याग की बात की है। अगर जैन सिद्धांतों के एक-एक सूत्र को ध्यान में रखकर अपनी जीवन शैली को अपने तो वैश्विक समस्याओं का समाधान निहित है। इस अवसर पर जैन समाज के मंत्री विकास पांड्या ने कहा कि जैन समाज के लोग दसलक्षण पर्व को बहुत ही उल्लास और भक्ति भाव के साथ मना रही है। प्रातः श्रीजी का अभिषेक, शांतिधारा, तदुपरांत तत्वार्थ सूत्र, भक्तांबर स्तोत्र प्रवचन, महा आरती, दस धर्म स्वाध्याय एवं रात्रि में जैन समाज की युवा युवतियों द्वारा संस्कृतिक कार्यक्रमों कार्यक्रम की जोरदार प्रस्तुति दी जा रही है। सांस्कृतिक कार्यक्रम संयोजक निर्मल पाटनी ने बताया कि नगर के सभी मंदिरों में जोरदार लाइटिंग एवं सजावट देखने योग्य है।उन्होंने कहा कि लोगों का उत्साह धर्म की प्रभाव न को बढ़ता है। यही कारण है कि दैनिक कार्यक्रमों में युवा बुजुर्ग महिला पुरुष सभी उत्साह के साथ सम्मिलित हो रही है। इस अवसर पर हरखचंद व पुष्पादेवी काला (शिलोंग) सुरेश कासलीवाल, अनिल पहाड़िया, अशोक सेठी, राजेश कासलीवाल, प्रकाश पांड्या, चंदकपूर सेठी, सुरेंद्र कासलीवाल, महेंद्र गंगवाल, आकाश कासलीवाल, महेंद्र सेठी, सुरेंद्र सेठी, राज पाटनी, विशाल सेठी, रंजू पांड्या, रेखा जैन, सुशीला कासलीवाल, डॉ मनीषा जैन, महिमा जैन, सोनिका कासलीवाल, सोनम पाटनी, वीणा जैन सहित सैकड़ो लोग नगर के विविध मंदिरों में भक्ति भाव के साथ पूजा अर्चना में सम्मिलित होकर धर्म लाभ ले रहे। इस अवसर पर। उपमंत्री अंकुश सेठी ने सभी कार्यकर्ता श्रावक-श्राविकाओं के प्रति आभार व्यक्त किया ।

जैन मुनि शुद्ध सागर महाराज एवं श्रावक श्राविकाओं ने किया दशलक्षण उपवास

विमल जोला. शाबाश इंडिया

निवाई ।सकल दिगम्बर जैन समाज के तत्वावधान में जैन मुनि शुद्ध सागर महाराज एवं विधानाचार्य पण्डित सुरेश कुमार शास्त्री के सानिध्य में निवाई में जैन मुनि शुद्ध सागर महाराज एवं श्रावक श्राविकाएं पुनित संधी हितेश छाबड़ा पदमचंद जैन एवं शिमला जैन रश्मि जैन सहित कई श्रावक श्राविकाओं ने 10 दिन के दशलक्षण पर्व में निर्जरा उपवास किए। जैन समाज के प्रवक्ता विमल जौला ने बताया कि मंगलवार को सभी तपस्वियों ने निर्जरा 8 उपवास पूरे किए जो चतुर्दशी तक उपवास चलेगा। इस दौरान साता पूंछने का एंव विनतियो का दौर शुरू हुआ जिसमें महिलाओं ने तपस्वियों के यहां शांतिनाथ भवन में विनतियो में भजन कीर्तन एवं भक्ति नृत्य की प्रस्तुतियां दी। इस दौरान पण्डित सुरेश कुमार शास्त्री ने श्रद्धालुओं को कहा कि यह उपवास जन्म जन्म के बंधे हुए कर्म का क्षय करके अपने जीवन को सार्थक बनाने के लिए मोक्ष मार्ग पर चलने का प्रयास किया हमे अपने जीवन में इस तरह की भक्ति आराधना करनी चाहिए।

थड़ी मार्केट जैन मंदिर में ''आत्मा से परमात्मा की ओर'' भव्य झांकी का आयोजन

जयपुर. शाबाश इंडिया। श्री पार्श्वनाथ दिगंबर जैन मंदिर थड़ी मार्केट में सुगंध दशमी के पावन अवसर पर **''आत्मा से परमात्मा की ओर''** सजीव भव्य झांकी का आयोजन किया गया। मंदिर समिति के मंत्री अनिल बाकलीवाल ने बताया कि झांकी में करीब 120 बच्चे, महिलाएं और पुरुष ने हिस्सा लिया जिसमें भगवान के पांचो कल्याणक दिखाए गए पूरे जयपुर से करीब पांच हजार लोगों ने झांकी का अवलोकन किया जिसमें जनता द्वारा समोशरण और सिद्ध शिला को बहुत ही सराहा। झांकी का उद्घाटन नितिन भोचं द्वारा किया गया इसके अलावा झांकी में पंकज लुहाडिया, पवन नगीना, भंवरी देवी नीता जैन सिद्धू जैन मनीष जैन आदि उपस्थित रहे।

आपके विचार

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक एवं सम्पादक राकेश जैन गोदिका द्वारा प्रकाशित दैनिक-ईपेपर 'शाबाश इंडिया' आम पाठक और समाज में जागरूकता फैलाने में सेतू का काम कर रहा है। आप अपने क्षेत्र के समाचार, आलेख, विचार आदि ई-मेल कर सकते हैं या निम्न नंबरों पर वाट्सअप कर सकते हैं।

सम्पादकः राकेश जैन गोदिका
@ 94140 78380, 92140 78380

दैनिक ई-पेपर
शाबाश इंडिया
shabaasindia@gmail.com
weeklyshabaas@gmail.com

दसलक्षण महापर्व (पर्यूषण पर्व) दसवां दिन

अपनी आत्मा में रमण करना उत्तम ब्रह्मचर्य है

डॉ सुनील जैन संचय, ललितपुर

आज बात ''ब्रह्मचर्य धर्म'' की हैं। ब्रह्मचर्य जो हमारी साधना का मूल हैं, सभी साधनाओं में ब्रह्मचर्य को सबसे प्रमुख स्थान दिया गया हैं। आत्मा ही ब्रह्म है उस ब्रह्मस्वरूप आत्मा में चर्या करना सो ब्रह्मचर्य है। जिस प्रकार से एक अंक को रखे बिना असंख्य बिन्दु भी रखते जाइये किन्तु क्या कुछ संख्या बन सकती है? नहीं, उसी प्रकार से एक ब्रह्मचर्य के बिना अन्य व्रतों का फल कैसे मिल सकता है अर्थात नहीं मिल सकता। आज के समय में लोगों के हृदय में देह आकर्षण हैं और देह आकर्षण को ही लोग प्रेम का नाम देने लगते हैं। बंधुओं! सच्चे अर्थों में वह प्रेम नहीं, वह तो केवल शारीरिक आकर्षण हैं, जो थोड़े दिन तक टिकता हैं, बाद में सब छूट जाता हैं। वस्तुतः प्रेम हमारे भीतर का आत्मिक स्तर का प्रेम होना चाहिए, वह प्रेम अगर एक बार उद्घाटित हो गया तो जीवन की दिशा-दशा सब परिवर्तित हो जाएगी। गृहस्थों को कहा गया कि तुम संयम में रहो, अपने स्वधार-संतोष व्रत का पालन करो, एक-दूसरे के अतिरिक्त सारे संसार में अपने भीतर पवित्रता ले आओ, तुम्हारा जीवन आगे बढ़ जाएगा क्योंकि काम का कभी अंत नहीं होता। जो व्यक्ति आत्मा के जितना निकट है वह उतना ही बड़ा ब्रह्मचारी है तथा जो आत्मा से जितना दूर है वह उतना ही बड़ा भ्रमचारी है। हमें ब्रह्मचारी और भ्रमचारी में अन्तर करके चलना है। ब्रह्मचारी का अर्थ है ब्रह्म (ब्रह्ममय आचरण करने वाला) में जीने वाला और भ्रमचारी का अर्थ है भ्रम में जीने वाला। भ्रम के टूटे बिना ब्रह्म को पाना असम्भव है और ब्रह्म को पाने के लिए उसका ज्ञान होना

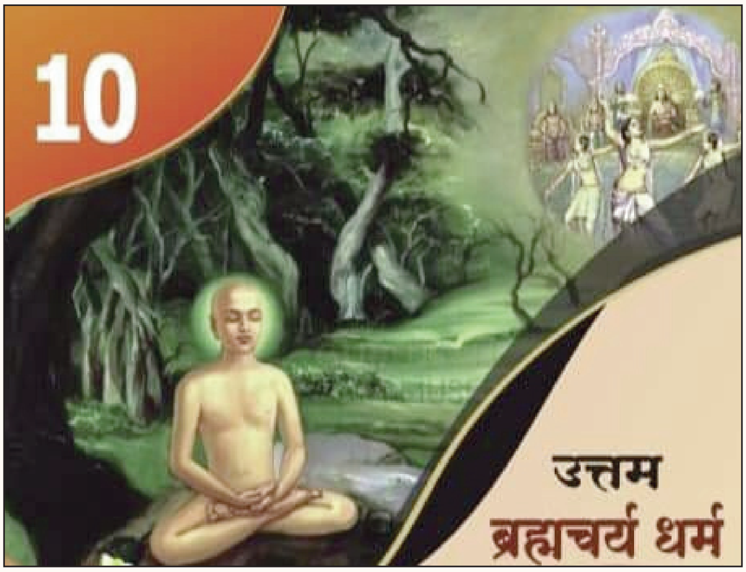

डॉ. सुनील जैन संचय
ज्ञान-कुसुम भवन,नेशनल कान्वेंट स्कूल के सामने,
गांधीनगर, नईबस्ती,ललितपुर 284403, उत्तर प्रदेश
मोबाइल, 9793821108
ईमेल- suneelsanchay@gmail.com
(आध्यात्मिक चिंतक व जैनदर्शन के अध्येता)

आवश्यक है। आत्मा की दूरी और नैकट्य से ही ब्रह्म और अब्रह्मचर्य का परिचय मिलता है। ब्रह्मचर्य व्रत के बिना जितने भी कायक्लेश तप किये जाते हैं वे सब निष्फल हैं, ऐसा श्री जिनेन्द्र देव कहते हैं। बाहर में स्पर्शन इन्द्रियजन्य सुख से अपनी रक्षा करो और अभ्यंतर में परमब्रह्म स्वरूप का अवलोकन करो। इस उपाय से मोक्षरूपी घर की प्राप्ति होती है। शील की रक्षा के लिए, नौ बाढ़ों का पालन करना चाहिए तथा अपना ब्रह्म स्वरूप अंतरंग में देखना चाहिए। तथा इनकी वृद्धि की भावना नित्य भानी चाहिए क्योंकि इससे ही यह मनुष्य भव सफल होगा। ब्रह्मचर्य को धारण करना हैं तो देह नहीं, देही को पहचानो। भीतर की आत्मा को पहचानो, जो शरीर में होकर के भी शरीरातीत हैं, उसे पहचानने की कोशिश करो। वह आत्म-तत्व हैं, जिसकी दृष्टि आत्मा पर केंद्रित हो जाती हैं, उसके हृदय में ब्रह्मचर्य का विलास प्रकट होता हैं और जिसकी दृष्टि में केवल शरीर होता हैं वह भोग की वासना का शिकार बनता हैं। अपने अंदर दृष्टि जाग्रत कीजिये और देह-दृष्टि से ऊपर उठने की कोशिश कीजिए। **स्वतंत्रता की दुहाई देकर हम स्वच्छंद होते जा रहे हैं:** आज गृहस्थ का आचरण मयार्दा विहीन होता जा रहा है। निरन्तर मयार्दायें टूट रही हैं। स्वतंत्रता की दुहाई देकर हम स्वच्छंद होते जा रहे हैं। पश्चिम की अय्यासी जिंदगी का भूत सवार है। ऐसे युग में यदि हमें ब्रह्मचर्य धर्म की शिक्षा और उसके संस्कार लेने हैं तो सबसे पहले विदेशों से आई इस अपसंस्कृति से बचना होगा। कुत्सित साहित्य, फिल्मी संसार और भड़कीले तथा अमर्यादित फैशन / परिधान से बचना होगा। खानपान की शुद्धि पर ध्यान रखकर शुद्ध सात्विक विचारधारा रखनी होगी। अपने घर परिवार, समाज, नगर, राज्य और देश की जिन सीमा / मर्यादाओं का उल्लंघन कर हमने समुन्दर पार पश्चिम की सभ्यता को अपना लिया है उसे आज ही और इसी समय तिलांजलि देना होगी और भारतीय चिन्तनधारा के मूल संयम / सादगी से बंधना होगा। जैसे बाँध फटता है तो तबाही हो जाती है ठीक वैसे ही जब मयार्दा टूटती है व्यक्ति की, परिवार की, समाज की तो फिर पतन ही पतन, विनाश ही विनाश रहता है। शील की रक्षा के लिए, नौ बाढ़ों का पालन करना चाहिए तथा अपना ब्रह्म स्वरूप अंतरंग में देखना चाहिए। तथा इनकी वृद्धि की भावना नित्य भानी चाहिए क्योंकि इससे ही यह मनुष्य भव सफल होगा।

त्याग के प्रति ममत्व का त्याग कराता है उत्तम आकिंचन्य धर्म : गुरु माँ विज्ञाश्री माताजी

गुंसी, निवाई. शाबाश इंडिया। श्री दिगम्बर जैन सहस्त्रकूट विज्ञातीर्थ गुन्सी में विराजित गणिनी आर्यिका विज्ञाश्री माताजी ने धर्मसभा में उपस्थित श्रद्धालुओं से कहा कि - ममत्व के परित्याग को आकिंचन्य कहते हैं। आकिंचन्य का अर्थ होता है कि मेरा कुछ भी नहीं है। अपने उपकरणों एवं शरीर से भी निर्ममत्व होना ही उत्तम आकिंचन्य धर्म है, क्योंकि कई बार सबका त्याग करने के बाद उस त्याग के प्रति ममत्व हो सकता है। आकिंचन्य धर्म में उस त्याग के प्रति होने वाले ममत्व को भी त्याग कराया जाता है। दशलक्षण महामण्डल विधान के नवमें दिन आज उत्तम आकिंचन्य धर्म पूजन के अंतर्गत मंडल पर 16 अर्घ्य चढ़ाकर भक्तिभावों के साथ पूजन सम्पन्न करायी। दशधर्म की पूजन कराने का सौभाग्य महेंद्र झिराना, अशोक चाँदवाड़ जयपुर, एवं अमित खुरई वालों को प्राप्त हुआ। 28 सितम्बर अनन्त चतुर्दशी के दिन विशेष 12 वें तीर्थंकर भगवान वासुपूज्य जी के मोक्ष कल्याणक महोत्सव के अवसर पर 12 किलो का निर्वाण लाडू चढाया जायेगा। साथ ही दशलक्षण उपवास कर्ताओं की विनतियाँ एवं कलशाभिषेक का आयोजन होगा। दशलक्षण महामंडल विधान के समापन के पश्चात विश्वशांति महायज्ञ की आहुति पूर्वक शान्तिमन्त्र का जाप्यानुष्ठान होगा।

दसलक्षण पर्व का नवां दिन उत्तम आकिंचन धर्म, भक्तिभाव से हुई पूजा अर्चना

अनंत चतुर्दशी गुरुवार को: व्रतियों का पारणा महोत्सव शुक्रवार को मनाया जाएगा

वी के पाटोदी. शाबाश इंडिया

सीकर ।शहर के सभी जैन मंदिरों में बुधवार को उत्तम आकिंचन धर्म की पूजा की गई ।दीवान जी की नसियां में पूजन के दौरान ब्रह्मचारिणी बबीता दीदी ने बताया कि हम भौतिक चीजों के प्रति अपने सुख को ढूंढते हैं।परंतु ये हमारे दुःख का कारण बनते हैं।अनावश्यक वस्तुओं का परित्याग कर आवश्यक चीजों के साथ जीवन के व्यतीत करना अकिंचन धर्म है।शहर के बड़ा जैन मंदिर, दंग की नसियां , सेठी कॉलोनी जैन मंदिर, देवीपुरा जैन मंदिर सहित समस्त 11 जैन मंदिरों में दसलक्षण महापर्व के दौरान विशेष धार्मिक आयोजन किए जा रहे है ।निकटवर्ती ग्राम रैवासा स्थित श्री दिगंबर जैन भव्योंदय अतिशय क्षेत्र में भी विशेष पूजा अर्चना चल रही है। गुरुवार को प्रातः वासुपुज्य भगवान का मोक्ष कल्याणक , अनंत चतुर्दशी महोत्सव भक्तिभाव से मनाया जाएगा। प्रवक्ता विवेक पाटोदी ने बताया कि शहर में इस वर्ष दसलक्षण महापर्व पर चार व्रतियों ने दसलक्षण के 10 दिन उपवास किए है ।सभी व्रतियों का पारणा शुक्रवार को प्रातः होगा ।शुक्रवार को पारणा पश्चात प्रातः 7:30 बजे दीवान जी की नसियां से व्रती तनीषा बड़जात्या को शोभायात्रा द्वारा उनके निवास स्थान लाया जाएगा ।इसके पश्चात 8:30 बजे व्रती मनोज अलका बाकलीवाल व सुरेश बड़जात्या को बावड़ी गेट स्थित बड़ा मंदिर से शोभायात्रा के साथ उनके निवास स्थान लाया जाएगा।जिसमे सभी समाजजन सम्मिलित होंगे ।

जैन मंदिर पारस विहार, मुहाना मंडी में उत्तम आकिंचन धर्म की पुजा हुई

जयपुर. शाबाश इंडिया। चिंतामणी पार्श्वनाथ दिगंबर जैन मंदिर, मोहनपुरा, मुहाना मंडी, जयपुर में दशलक्षण महापर्व में बुधवार दिनांक 27 सितम्बर तेरस को उत्तम आकिंचन के दिन प्रातः 7.00 बजे मुल नायक 300 वर्ष प्राचीन श्री 1008 पार्श्वनाथ

भगवान जी के अभिषेक, शान्ति धारा करने का सोभाग्य मिला।मदिर समिति अध्यक्ष पवन कुमार गोदीका ने बताया कि साधर्मी बन्धु संतोष -शोभा बगड़ा, धमेंद्र -मीना गोदीका, सुभाष -सुनिला पाटनी, नरेश - सुमन अजमेरा, रमेश -मुहाना, विकास सोगाणी, श्रेयांस पाटनी, सुमति बड़जात्या,अभिषेक छाबड़ा, रतन जी, योगेन्द्र जी बड़जात्या, मनोज बाकलीवाल, नवीन काला, विरेश लुहाड़िया, पदम चंद शाह, अभिषेक शाह, पुनीत - ममता सोगाणी आदि सभी श्रद्धालुओं भक्ति भाव से दसलक्षण महामण्डल विधान पर उत्तम आकिंचन धर्म की पुजा की।

दस धर्म में आंकिंचन धर्म की भक्ति भाव के साथ हुई पूजन

जब आत्मा अकेली रह जाती है, तब प्रकट होता है आकिंचन धर्म: आर्यिका विशेष मति

जयपुर. शाबाश इंडिया

जनकपुरी - ज्योतिनगर जैन मन्दिर में गणिनी आर्यिका विशुद्ध मति माताजी की शिष्या बालयोगिनी आर्यिका विशेष मति माताजी के सानिध्य में आंकिंचन धर्म की पूजा भक्ति भाव के साथ हुई ।प्रबन्ध समिति अध्यक्ष पदम जैन बिलाला ने बताया की प्रातः अभिषेक शांतिधारा व नित्य पूजन के बाद आंकिंचन धर्म की पूजन , विधान मण्डल पर पूजाकर्ताओं द्वारा ''अत्र मम सत्रिहितो भव भव वषट् !'' बोलते हुए स्थापना कर झूमते गाते की गई । आर्यिका श्री ने आंकिंचन धर्म के 108 जाप कराये तथा इसके पूर्व आर्यिका श्री ने प्रवचन में कहा कि आकिंचन का अर्थ है अकेला होना, कुछ भी मेरा नहीं।

आकिंचन की स्थिति बनती है बाह्य और अंतरंग सभी तरह के परिग्रह के पूर्ण त्याग से। क्रोध, मान, माया, लोभ, मिथ्यात्व, धन धान्य आदि परिग्रह का पूर्ण त्याग कर देने पर जब आत्मा अकेली रह जाती है, तब प्रकट होता है आकिंचन धर्म । परिग्रह दुःख व चिन्ता का कारण है।साधु सन्तों के लिए इसका बहुत महत्व है। दिन में व्रत उपवास वालों की विनतियाँ तथा तत्वार्थ सूत्र वाचन हुआ। शाम को म्यूज़िकल हाऊजी का आयोजन हुआ। कल अनन्त चतुर्दशी का कार्यक्रम होगा ।

दशलक्षण के त्याग धर्म पर छोटी बहु नाटक का मंचन

कुचामन सिटी

''छोटी बहू'' धार्मिक नाटक द्वारा संस्कारवान होने की प्रेरणा दी। 26 सितंबर मंगलवार को 'श्री महावीर दिगंबर जैन मंदिर' डीडवाना रोड पर सांस्कृतिक कार्यक्रम में महिलाओं द्वारा बहुत ही आकर्षक व धार्मिक संस्कारवान नाटिका प्रस्तुत की गई। इसमें सभी नाट्य कलाकारों द्वारा बहुत ही शानदार प्रस्तुति दी गई इसमें प्रिया गंगवाल, नीता जैन, बुलबुल जैन, पूनम पटौदी, इना, खुशबू गंगवाल शिल्पा पहाड़िया, रिचा जैन , आदि, जिनीषा जैन द्वारा संस्कार युक्त नाटक प्रस्तुत किया गया सभी कलाकारों का अभिनय बहुत ही सराहनीय व प्रेरणा दायक रहा। जिससे दर्शकों को मंत्र मुग्ध होकर देखकर वाह वाह की, कार्यक्रम मे समाज के सभी गणमान्य विनोद गंगवाल, भागचंद अजमेरा, महेंद्र पहाड़िया , प्रदीप गंगवाल आदि गणमान्य जन उपस्थित थे मन्दिर समिति द्वारा सभी कलाकारों का धन्यवाद ज्ञापित कर साधुवाद किया।

दशलक्षण महापर्व के चलते आज नौवें दिन हुई आकिंचन्य धर्म की पूजा अर्चना

आकिंचन्य की अनुभूति वही कर सकता है जिसे अपने आत्मा के स्वरूप का ज्ञान होता है: आर्यिका सुबोधमति माताजी

फागी. कासं

कस्बे सहित परिक्षेत्र के चकवाड़ा, चौरु ,नारेड़ा, मंडावरी ,मेहंदवास ,निमेडा एवं लदाना सहित सभी जिनालयों में दशलक्षण महापर्व के चलते आज नौवें दिन आकिंचन्य धर्म की पूजा अर्चना हुई, जैन महासभा के प्रतिनिधि राजाबाबू गोधा ने बताया कि कार्यक्रम में प्रातः अभिषेक,शांतिधारा, अष्टद्रव्यों से पूजा अर्चना के बाद विभिन्न धार्मिक आयोजनों के साथ अनेक सांस्कृतिक कार्यक्रमो की भी धूम मची हुई है कार्यक्रम में समाज के कैलाश चंद ,हनुमान प्रसाद ,सीताराम, अशोक कुमार, विनोद कुमार भरत लाल, प्रकाश, शैलेन्द्र, रवि,दीपक, जैन कलवाड़ा परिवार ने आज बोली के माध्यम से शांति धारा एवं विधान पूजा का सौभाग्य प्राप्त किया, विधान में भक्ति भाव के साथ 100 अर्घ्य समर्पित कर सुख,शांति, और समृद्धि की कामना की गई।गोधा ने अवगत कराया कि कार्यक्रम में आर्यिका सुबोधमति माताजी ने आज दशलक्षण पर्व के नौवें रोज आकिंचन्य धर्म की व्याख्या करते हुए श्रृदालुओं को बताया कि ममत्व के परित्याग को आकिंचन्य कहते हैं, आकिंचन्य की अनुभूति वहीं कर सकता है जिसे अपने आत्मा के स्वरूप का ज्ञान होता है।आकिंचन्य का अर्थ होता है मेरा कुछ भी नहीं है, घर ,द्वार, धन ,दौलत ,भाई बंधु यहां तक की शरीर भी मेरा नहीं है। इसप्रकार अनासक्ति भाव का उत्पन्न होना उत्तम आकिंचन्य धर्म है। उक्त कार्यक्रम में मोहनलाल झंडा,समाजसेवी सोहनलाल झंडा,केलास कलवाडा, अग्रवाल समाज के अध्यक्ष महावीर झंडा, सरावगी समाज के अध्यक्ष महावीर अजमेरा, फागी पंचायत समिति के पूर्व प्रधान सुकुमार झंडा, पूर्व प्रधान महावीर प्रसाद बावडी, रतननला, हरकचंद पीपलु,धर्म चंद पीपलु, रमेश बावड़ी,राजेंद्र मोदी, राजेंद्र कलवाडा,महेंद्र बावड़ी, चातुर्मास समिति के अध्यक्ष अनिल कठमाना, उपाध्यक्ष सुरेंद्र बावड़ी, विनोद कलवाडा, कमलेश मंडावरा,विमल कलवाडा, सुशील कलवाड़ा, राजकुमार मांदी, मनीष गोधा,पारस मोदी, मितेश लदाना, कमलेश झंडा,कमलेश चोधरी, कमलेश सिंघल,त्रिलोक पीपलू तथा राजाबाबु गोधा सहित सभी श्रावक श्राविकाएं मोजूद थे।

अनन्त चतुर्दशी के साथ दशलक्षण पर्व का होगा समापन

कामा. शाबाश इंडिया। दस दिवसीय दशलक्षण महापर्व 19 सितम्बर से प्रारम्भ हुए जिसमें क्रमश उत्तम क्षमा, मार्दव ,आर्जव सत्य शौच, संयम, तप,त्याग आकिंचन धर्म की विशेष आराधना जैन श्रावकों ने बड़े भक्ति भाव से की, जिसका समापन उत्तम ब्रह्मचर्य धर्म के साथ गुरुवार, 28 सितम्बर को होगा तो वही जैन श्रावक ओर श्राविकाओं द्वारा व्रत उपवास रखें जाएंगे। शान्तिनाथ दिगम्बर जैन मंदिर के महामंत्री संजय जैन बड़जात्या ने अवगत कराया कि विगत दस दिनों से जैन मंदिरों में धर्म की महत्ती प्रभावना हुई तो वही जैन श्रावक श्राविकाओं ने मनोयोग से दस धर्मो की आराधना की। अंतिम दिवस जैन धर्म के बारहवें तीर्थंकर वासुपूज्य भगवान का निर्वाण कल्याणक पर मनाया जाएगा। शांतिनाथ मन्दिर दिवान के प्रांगण में दोपहर को सामूहिक अभिषेक विजयमती स्वाध्याय भवन में किये जायेंगे।प्रदीप जैन के अनुसार बुधवार को आकिंचन धर्म की पूजा की गई तो परिग्रह को कम कर त्याग की ओर बढ़ने का संदेश दिया गया। आवश्यकता से अधिक संग्रह संसार मे उलझने का प्रमुख कारण है। **सामूहिक क्षमापना पर्व 1 अक्टूबर को** :- मन्दिर समिति के कार्याध्यक्ष उत्तम जैन के अनुसार सामूहिक रूप से क्षमा पर्व का आयोजन 1 अक्टूबर को सायं मंदिर प्रांगण में आयोजित किया जाएगा।

चौमूं में दस लक्षण महापर्व पर उत्तम आकिचन धर्म की पूजन हुई

चौमूं. शाबाश इंडिया। शहर में चंद्रप्रभु शांतिनाथ पारसनाथ दिगंबर जैन मंदिर जी में जैन समाज द्वारा दस लक्षण महापर्व के दिवस पर प्रातः कालीन अभिषेक शांति धारा एवं उत्तम आकिचन धर्म की पूजन की गई जैन समाज प्रवक्ता पंकज बडजात्या ने बताया कि आज के अभिषेक शांति धारा का सौभाग्य धन कुमार अनिल कुमार मनोज कुमार संतोष कुमार जैन इटावा वालों को प्राप्त हुआ । अकिंचन धर्म यह बताता है कि मनुष्य तन की भूख तो भोजन से मिटा सकता है लेकिन मन का कुछ भी पता नहीं उसकी चाहत बढ़ती ही जाती है उत्तम आकिचन धर्म बताता है कि आदमी की तृष्णा कभी कम नहीं होती वह दिन प्रतिदिन बढ़ती ही जाती है आत्मा की उस दशा का नाम है जहां पर बाहरी तो सब कुछ छूट जाता है किंतु आंतरिक संकल्प विकल्प भी शांत हो जाते हैं आत्म के सिवाय मेरा नहीं है यही आकिचन धर्म है । संयोजक नितेश पहाड़िया के सानिध्य में आयोजकों द्वारा महा आरती णमोकार भजन नृत्य प्रतियोगिता इत्यादि कार्यक्रम संपन्न हुए हाऊ जी के सभी विजेताओं को सरिता देवी, ऋषभ रारा द्वारा सम्मानित किया गया। विजेताओं में लक्ष्मी देवी, साक्षी जैन, भरत जैन, शोभा जैन, ऋतु जैन रही। आयोजक हीरालाल जैन ने बताया इन सभी कार्यक्रम के दौरान नेहा जैन, पिंकी जैन, बबिता जैन, विनीता पहाड़िया, समाज अध्यक्ष राजेंद्र जैन, मंत्री राजेंद पाटनी, नेमीचंद जैन, अजय जैन, पदमचंद जैन, अनिल जैन, महेश छाबड़ा, विनोद कासलीवाल इत्यादि श्रावक मौजूद थे।

दसलक्षण पर्व के नवें दिन प्रताप नगर में गूंजे उत्तम आकिंचन धर्म के जयकारें

हुआ स्वर्ण एवं रजत कलशो से श्रीजी का कलशाभिषेक और अष्ट द्रव्यों से पूजन

किंचित भी पर पदार्थ स्वीकार नही करना ही उत्तम आकिचन धर्म : आचार्य सौरभ सागर

जयपुर. शाबाश इंडिया

राजधानी के दक्षिणी भाग स्थित प्रताप नगर सेक्टर 8 शांतिनाथ दिगंबर जैन मंदिर में चल रहे आचार्य सौरभ सागर महाराज के 29 वें वर्षायोग के अंतर्गत दसलक्षण पर्व के नवें दिन बुधवार को उत्तम आकिचन धर्म पर्व मनाया गया और गुरुवार को दसलक्षण पर्व का अंतिम दिवस उत्तम ब्रह्मचर्य धर्म के रूप में मनाया जायेगा। साथ ही 12 वें तीर्थंकर भगवान वासुपुज्य स्वामी का मोक्ष कल्याणक पर्व एवं अनंत चतुर्दशी पर्व भी मनाया जायेगा। गुरुवार को जयपुर सहित देशभर के जैन मंदिरों में उत्तम ब्रह्मचर्य धर्म की शुरूवात प्रातः 6.15 बजे से चौबीस तीर्थंकर भगवानों के स्वर्ण एवं रजत कलशों से कलशाभिषेक एवं शांतिधारा कर प्रारंभ होगी। इसके पश्चात जैन मंदिरों में 12 वें तीर्थंकर भगवान वासुपुज्य स्वामी का अष्ट द्रव्यों से पूजन कर जयमाला अर्घ का गुणगान करते हुए निर्वाण लड्डू चढ़ाया जायेगा। प्रताप नगर में आचार्य सौरभ सागर महाराज के सानिध्य ने 12 किलो का निर्वाण लड्डू चढ़ाया जायेगा। इस दौरान प्रातः 7.15 बजे से उत्तम ब्रह्मचर्य धर्म और अनंत चतुर्दशी के अवसर पर चौबीस तीर्थंकर भगवानों का पूजन किया जायेगा। इस बीच प्रातः 8.30 बजे आचार्य सौरभ सागर महाराज के मंगल प्रवचन होगे। बुधवार को आचार्य सौरभ सागर महाराज के सानिध्य में दशलक्षण महापर्व के नवें दिन उत्तम आकिंचन धर्म का जयकरों के साथ गुणगान किया गया। इस अवसर पर प्रातः 6.15 बजे से मूलनायक शांतिनाथ स्वामी के स्वर्ण एवं रजत कलशों से अभिषेक किये गए एवं शांतिधारा की गई। प्रातः 8.30 बजे आचार्य सौरभ सागर महाराज ने उत्तम आकिंचन धर्म पर अपने उपदेश में कहा की मैं आकिंचन हुं, कुछ भी मेरा नहीं है परन्तु मोह के वश से यह मेरा हैं मै इसका हु। इस प्रकार की जो मूर्छा है उसको दुष्ट ग्रह की तरह मेरा कुछ नहीं है इस आकिंचन रूपी प्रसिद्ध मंत्र के सतत अभ्यास से जो नष्ट करते हैं वे विश्व के स्वामी सज्जनो के आश्चर्य कारी चारित्र का निरन्तर आचरण करते हैं। कुछ लोग काला सर्प के समान विषैले होते हैं, सर्प कॉचली तो छोडता है किन्तु विष नही छोडता। उसी प्रकार कोई दुर्बुद्धि बाला वस्त्र आदि का त्याग करता है किन्तु परिग्रह नहीं छोडते है। जैसे मगध सम्राट विम्बसार राजा श्रेणिक के जीवन का प्रसंग है। एक लंगोट का परिग्रह भी ऐलक जी को सोलहवे स्वर्ग के ऊपर नहीं जाने देता है। किंचित भी पर पदार्थ स्वीकार नही करना ही आकिचन है। प्रचार संयोजक सुनील साखुनियां ने बताया कि गुरूवार को दशलक्षण पर्व का दसवां और अंतिम दिन है गुरवार को जैन श्रद्धालु श्रद्धा-भक्ति के साथ उत्तम ब्रह्मचर्य धर्म और अनंत चतुर्दशी पर्व हर्सोल्लास के साथ मनायेगे, गुरुवार को जैन मंदिरों में अलग ही उत्साह देखने को मिलेगा, बड़ी संख्या में श्रद्धालु (बच्चे, युवक, युवतियां, महिला, पुरुष, बड़े-बुजुर्ग सभी मिलकर) श्रीजी का कलशाभिषेक, शांतिधारा कर पूजन विधान करेंगे, अनत चतुर्दशी के अवसर पर मंदिर के प्रांगन में चोबीस तीर्थंकर भगवानों का भव्य पूजन गीत झ संगीत के साथ होगा, उसके बाद दोपहर मध्याह 12.15 बजे से पुनः चोबीस तीर्थंकर भगवानो का पूजन प्रारम्भ होगा. जो संध्या से पूर्व सम्पन्न होगा जिसके बाद श्रीजी का कलशाभिषेक, शांतिधारा का आयोजन होगा और श्रीजी की माल का आयोजन होगा। शुक्रवार को सभी त्यागी झ व्रतियों का सामूहिक पारणा एवं सम्मान समरोह आचार्य श्री के सानिध्य में चातुर्मास समिति, समाज समिति एवं महिला मंडल द्वारा किया जायेगा। अखिल भारतीय दिगंबर जैन युवा एकता संघ अध्यक्ष अभिषेक जैन बिट्टू ने बताया की गुरुवार को जैन धर्म के 12 वें तीर्थंकर भगवान वासुपूज्य स्वामी का मोक्ष कल्याणक भी हर्षोल्लास के साथ मनाया जायेगा। इस अवसर पर जयपुर के पदमपुरा में आचार्य चैत्य सागर महाराज, प्रताप नगर सेक्टर 8 में आचार्य सौरभ सागर महाराज, श्योपुर रोड़, प्रताप नगर में आचार्य विनीत सागर महाराज, बरकत नगर में आचार्य नवीन नंदी महाराज, आमेर में उपाध्यक्ष उर्ज्यंत सागर महाराज, मीरा मार्ग, मानसरोवर में मुनि संघ सानिध्य, जनकपुरी में आर्यिका विशेषमति माताजी, बिलवा में आर्यिका नंगमति माताजी, बगरू में आर्यिका भरतेश्वरी माताजी ससंघ सानिध्य में वासुपुज्य भगवान का निर्वाण महोत्सव, अनंत चतुर्दशी पर्व और उत्तम ब्रह्मचर्य धर्म मनाया जायेगा। अभिषेक जैन बिट्टू ने बताया की गुरुवार को अनंत चतुर्दशी के अवसर पर सभी दिगम्बर जैन श्रद्धालु अपने सभी प्रकार के प्रतिष्ठान, व्यापार केन्द्र एवं नोकरी पेशा अवकाश पूरी तरह से अवकाश रखेगे। 75 फीसदी से अधिक नागरिक अनंत चतुर्दशी के अवसर पर निर्जल उपवास रखते है सामूहिक जिनेन्द्र आराधना कर पूरे दिनभर तीर्थंकर भगवानों का पूजन आराधना करते है। गुरुवार को सभी त्यागी वर्तियो का सामूहिक पारणा होगा और शुक्रवार को सभी जैन मंदिरों में सामूहिक क्षमावाणी पर्व मनाया जायेगा। इसके अतिरिक्त 1 अक्टूबर को राजस्थान जैन सभा द्वारा रामलीला मैदान पर क्षमावाणी पर्व का जयपुर स्तरीय आयोजन रखा गया है जिसमें आचार्य सौरभ सागर महाराज अपना सानिध्य देगे और प्रदेश के मुख्यमंत्री अशोक गहलोत मुख्य अतिथि सम्मिलित होगे।

संकलन : अभिषेक जैन बिटटू

निवाई में जोड़ी कमाल की धार्मिक प्रतियोगिता में उमड़ी भीड़

आज होगी उत्तम ब्रह्मचर्य धर्म की आराधना एवं विश्व शांति महायज्ञ

विमल जोला. शाबाश इंडिया

निवाई। सकल दिगम्बर जैन समाज निवाई एवं जैन मुनि शुद्ध सागर महाराज एवं अकम्पन सागर महाराज के सानिध्य में चल रहे पर्युषण पर्व के तहत दशलक्षण धर्म के आठवें दिन सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित किया गया जिसमें श्रद्धालुओं की भीड़ उमड़ पड़ी। दिगम्बर जैन सोशल ग्रुप प्रज्ञा निवाई शाखा के अध्यक्ष महावीर प्रसाद पराणा ने बताया कि धर्म प्रभावना महिला मण्डल एवं दिगम्बर जैन सोशल ग्रुप प्रज्ञा निवाई शाखा के तत्वावधान में 'जोडी.कमाल की' प्रतियोगिता आयोजित हुई जिसमें 11 जोडी.ने इस प्रतियोगिता में हिस्सा लिया। पराणा ने बताया कि इस प्रतियोगिता में प्रत्येक जोडी.से पांच पांच प्रश्न मंच किए गए एवं प्रत्येक जोडी.ने अपना अभिनय किया। पराणा ने बताया कि दिगम्बर जैन सोशल ग्रुप प्रज्ञा एवं धर्म प्रभावना महिला मण्डल के तत्वावधान में सोशल ग्रुप के सचिव विमल पाटनी जौंला एवं दिनेश सोगानी के नेतृत्व में 'जोडी. कमाल की' धार्मिक प्रतियोगिता का आयोजन किया गया जिसमें श्रद्धालुओं का हुजूम उमड़ पड़ा। इस दौरान कार्यक्रम में जज के लिए निर्णायक कमेटी बनाई गई जिसमें आशा लटुरिया प्रमिला छाबड़ा एवं पूर्णिमा गंगवाल का चयन हुआ। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि महावीर इन्टरनेशनल के अध्यक्ष हुकमचंद जैन बड़ा जैन मंदिर के मंत्री महेन्द्र चंवरिया पूर्व कोषाध्यक्ष राजेश गिन्दोडी. विज्ञा तीर्थ कमेटी के अध्यक्ष एवं सोशल ग्रुप के उपाध्यक्ष सुनील भाणजा कोषाध्यक्ष हितेश छाबड़ा यात्रा सचिव पुनित संधी सोशल ग्रुप के विमल सोगानी सोधर्म इन्द्र महावीर प्रसाद छाबड़ा आदि कई गणमान्य लोगों ने कार्यक्रम का फीता काटकर उदघाटन किया एवं आचार्य श्री विशुद्ध सागर महाराज की तस्वीर का लोकार्पण करके दीप प्रज्वलित कर सांस्कृतिक कार्यक्रम का शुभारंभ किया। जिसमें खचाखच भरे शांतिनाथ भवन में श्रद्धालुओं ने कार्यक्रम की प्रशंसा की।

जैन युवा परिषद् ने करायी जैन म्यूजिकल हाऊजी प्रतियोगिता

सीकरी. शाबाश इंडिया

जैन मंदिर में दशलक्षण पर्व के नवें दिन उत्तम आकिंचन्य धर्म मनाया गयो इस अवसर पर समाज के सभी लोगों ने बड़े भक्ति भाव से पूजा अर्चना की व शांतिधारा करने का सौभाग्य रिखवचंद अजय जैन परिवार को प्राप्त हुआ। आज गुरुवार को जैन मंदिर में अनंत चतुर्दशी पर्व मनाया जाएगा इस दौरान सुबह व दोपहर को जैन मंदिर में विशेष पूजा अर्चना होगी व शाम को कलशाभिषेक होगा जिसके पश्चात महाआरती भी होगी। इसके अलावा अखिल भारतवर्षीय दिगम्बर जैन युवा परिषद् सीकरी द्वारा मंगलवार रात्रि में जैन म्यूजिकल हाऊजी प्रतियोगिता करायी गई। युवा परिषद् के अध्यक्ष पुष्पेन्द्र जैन ने बताया कि प्रतियोगिता में मोक्ष पद के विजेता तनीषा जैन, अरिहंत के नैतिक, सिद्ध के सेजल, आचार्य के शिक्षा, उपाध्याय के पारूल, साधु पद के विशेष जैन विजेता रहे और सम्यक ज्ञान झलक जैन, सम्यक दर्शन तनु जैन, सम्यक चरित्र टीकम जैन को हुआ। इसके अलावा पंच परमेष्ठी के दर्शन अनीष जैन व मंगल काजल जैन को हुआ। अंत में एक लक्की ड्रा भी निकाला गया जिसकी विजेता रजनी जैन रही। सभी विजेताओं को युवा परिषद् द्वारा विशाल व आकर्षक उपहारों से पुरस्कृत किया गया।

श्री महावीर कॉलेज में हुआ राजस्थान विश्वविद्यालय के सेमेस्टर पैटर्न पर कार्यशाला का आयोजन

जयपुर

महावीर मार्ग सी स्कीम स्थित श्री महावीर कॉलेज में दिनांक 27 सितंबर को कॉलेज परिसर में राजस्थान विश्वविद्यालय के संघटक तथा संबद्ध कॉलेज के शिक्षकों को नए सिलेबस के पैटर्न तथा इंप्लीमेंटेशन से अवगत कराने हेतु महावीर सभागार में "New Curriculum Framework by University of Rajasthan as per NEP 2020" विषय पर कार्यशाला का आयोजन किया गया।कार्यशाला में मुख्य वक्ता के रूप में Prof. G.P. Singh , Nodal Officer NEP 2020, Dr. M.L. Vaista तथा Dr. C.P. Singh Committee Members NEP 2020 युनिवर्सिटी ऑफ़ राजस्थान रहे।इस कार्यशाला में राजस्थान विश्वविद्यालय से संबंधित महाविद्यालय से लगभग 400 फैकल्टी मेंबर्स ने भाग लिया । जिसके अंतर्गत प्रतिभागियों ने स्पीकर्स द्वारा बताए गए यूनिवर्सिटी आफ राजस्थान के नए पाठ्यक्रम , नए सेमेस्टर पैटर्न में नई परीक्षा प्रणाली एवं पाठ्यक्रम में क्रेडिट स्कोर से संबंधित प्रश्नों को पूछ कर अपनी जिज्ञासाओं का समाधान किया । इस कार्यशाला में सभी आए हुए यूनिवर्सिटी आफ राजस्थान के संघटक महाविद्यालय, राजकीय महाविद्यालय एवं निजी महाविद्यालय के शिक्षकों का पंजीकरण निःशुल्क हुआ।अंत

में संस्था के अध्यक्ष उमराव मल संघी तथा मानद मंत्री सुनील बख्शी, कोषाध्यक्ष महेश काला तथा कॉलेज प्राचार्य डॉ. आशीष गुप्ता ने कार्यशाला के सफल आयोजन पर बधाई प्रेषित की तथा अन्य कॉलेज से आए हुए प्रतिभागी तथा स्पीकर्स को धन्यवाद ज्ञापित किया।

डॉ. आशीष गुप्ता प्राचार्य

ग्रहस्थ आजीवन धन-दौलत का त्याग नहीं कर सकते तो इसे दान में बदलें: मुनि पुगंव श्री सुधा सागर जी महाराज

कल 29 सितम्बर को होगा अखिल भारतीय श्रावक संस्कार शिविर का भव्य समापन

आगरा. शाबाश इंडिया

घर ग्रहस्थी में आजीवन धन दौलत का त्याग नहीं कर सकता बत्तीस से अधिक उपवास नहीं कर सकता ग्रहस्थ है जन्म जन्म के मेहमान की कमाई है ग्रहस्थ कैसे छोड़ सकता है इसलिए जैन दर्शन भगवान को आगे लाकर दान पुण्य की क्रिया से जोड़ देता है ।अष्ट प्रातिहार्य की एक एक क्रिया से लाभान्वित करेगा सूर्य को महान इसलिए कहा गया क्योंकि कि वह आपके जीवन में उजाला लेकर आता है। दुनिया में रहना है तो किसी ना किसी के काम के बने रहना नहीं तो आपको भी कचड़े की तरह बाहर फेक दिये जाओगे ।इसलिए कुछ ना कुछ जगत के हित के लिए करते रहना तब ही आपकी कीमत होगी आपका सम्मान होगा उक्त आश्य केउद्गार हरि पर्वत आगरा में अखिल भारतीय श्रावक संस्कार शिविर की विशाल धर्मसभा को संबोधित करते हुए मुनि पुगंव श्री सुधासागरजी महाराज ने व्यक्त किए। मध्यप्रदेश महासभा संयोजक विजय धुर्रा ने बताया कि अखिल भारतीय श्रावक संस्कार शिविर का भव्य समापन समारोह 29 सितम्बर को दोपहर एक बजे एम डी जैन कालेज हरि पर्वत पर परम पूज्य आध्यात्मिक संत निर्यापक श्रमण मुनि पुंगव श्री सुधा सागर जी महाराज क्षुल्लक श्री गंभीर सागर जी महाराज ससंघ के सान्निध्य में होगा जहां शिविर पुण्यार्जक परिवारो के साथ ही सभी ग्रुपो के सर्वश्रेष्ठ शिविरार्थी को धर्म प्रभावना समिति द्वारा सम्मानित किया जाएगा। इसके पहले नगर शिविर समापन पर भव्य शोभायात्रा निकाली जाएगी । धर्मप्रभावना समिति के अध्यक्ष प्रदीप जैन ढठउ, नीरज जैन (जिनवाणी) महामंत्री, निर्मल कुमार जैन मोट्या कोषाध्यक्ष, मनोज कुमार बाकलीवाल मुख्य संयोंजक, पी.एल. बैनाडा कार्याध्यक्ष, हीरालाल बैनाड़ा स्वागतध्यक्ष, जगदीश प्रसाद जैन, ललित जैन डायमन्ड, अमित बाबी, राजेश जैन गया बाई के जैन श्री विमल मारसंस भोलानाथ सिंघंई जितेन्द्रकुमार जैन शिखर चंद सिघई सभी से शिविरार्थी

के भव्यस्वागत की अपीलकी है। उन्होंने कहा कि जैन दर्शन के भगवान किसे के लिए कुछ नहीं करते एक बात कह दी अरंहत मंगलम सिद्ध मंगलम एक के साथ जाने से काम होते हैं और एक का नाम लेने से काम होता है तो कोन श्रेष्ठ है जिनके नाम से ही काम हो जाता है तो फिर जाने की आवश्यकता ही नहीं है ये है मंगल पाठ जो आपके जीवन को मगंल उज्जवल बनायेगा।

जो वस्तु हमारे लिए दु:ख दे उसे छोड़ें

ऐसी वस्तु जो हमे दुख देगी उस वस्तु को भी छोडों, तप कहता है रोटी को भी छोडो जो हमारे लिए महत्वपूर्ण, जरूरी है उनको भी कुछ समय के लिए छोडों, ये वस्तु जीवन के लिए बहुत जरुरी है उसे भी छोड़ों कुछ दिन के लिए छोडें अच्छी वस्तु जो समाज परिवार हमारे लिए हानिकारक नही उसे भी छोडों।

वृद्ध मां वाप आपके लिए सगुन है इनकी दुआएं लें

उन्होंने कहा कि जब जब आप कोई बाहरी निमित्त से परेशान होते हैं तो समझ लेना कि आपका स्वभाव कुत्ते के समान है। ऐसे व्यक्ति का कभी संकट नष्ट नहीं होंगे ये कर्म दुष्ट है । ये मुझे परेशान करते रहते हैं शेर बनों शेर। शेर कभी लाठी पर नहीं

दौड़ता शेर तो लाठी चलाने वाले पर झपटा मारता है हमें शेर बनना है कोई कर्म नौकर्म तुम्हारा कुछ नहीं बिगाड़ सकता। बड़े बुजुर्गो के अंदर मैंने दो शक्तियां देखी शगुन बुद्धि और रिग उरण शक्ति। वृद्ध मां बाप आपके लिए शगुन है। ये वृद्ध माता पिता तुम्हारे लिए मंगल रुप है इनके चरण स्पर्श करके जाओगे तो जो तुम चाहते वहीं मिलेगा ये भारतीय संस्कृति की विशेषता है या सब का कोई ना कोई उपयोग हैं जिनेन्द्र भगवान कुछ करते नहीं है।

सिद्धार्थ नगर जैन मंदिर नृत्य नाटिका का मंचन

जयपुर. शाबाश इंडिया। श्री दिगंबर जैन मंदिर खंडाका सिद्धार्थ नगर में आशी द्वारा जैन पाठशाला जाने के महत्व को भव्य नृत्य नाटिका प्रस्तुति की गई नाटिका में राजवी, रीवा, भाविका, निवांशी, रूही का पाया सानवी आदि बच्चों ने सुंदर प्रस्तुति दी। उपस्थित समाज के गणमान्य लोगों ने बहुत सराहना की।

भक्ति मे शक्ति होगी तभी परमात्मा को हम अपना बना सकते है : महासती प्रितीसुधा

भीलवाड़ा. शाबाश इंडिया

भक्ति मे शक्ति होगी तभी परमात्मा को हम अपना बना सकते है बुधवार अहिंसा भवन शास्त्री नगर में महासती प्रितीसुधा श्रध्दांलूओ को धर्मसभा में सम्बोधित करतें हुए कहा कि परमात्मा किसी व्यक्ति विशेष से बंधे हुये नहीं होते है,जो व्यक्ति निस्वार्थ भाव से भक्ति करता है, भगवान उसी के हो जातें हैं। भगवान को धन दौलत से नही खरीदा जा सकता है।भगवान भक्त के भावो से वशीभूत होकर स्वयं बंध जाते है। भक्ति में हमारी शक्ति होगी तभी हम परमात्मा को अपना बना पाएंगे। अहिंसा भवन के मुख्य मार्ग दर्शक अशोक पोखरना ने जानकारी देते हुए बताया कि इसदौरान साध्वी संयम सुधा ने महासती प्रितीसुधा से बारह उपवास की तपस्या के प्रत्याख्यान लिए। इसदौरान धर्मसभा में चैन्नई जैन समाज के प्रतिष्ठ समाजसेवी सुरेश चन्द कोठारी श्री संघ अहिंसा भवन के शांतिलाल कांकरिया,नंदलाल डागलिया, संदीप छाजेड़,महिला मंडल की अध्यक्षा नीता बाबेल,रजनी सिंघवी सुनिता झामड़ मंजू बाफना आदि सभी साध्वी मंडल के तप की अनूमोदना की निलिष्का जैन बताया की साध्वी संयम सुधा के बड़ी तपस्या की भावना है। **-प्रवक्ता निलिष्का जैन**

दुगार्पुरा जैन मंदिर में उत्तम आकिंचन धर्म की पूजा हुई

जयपुर. शाबाश इंडिया। श्री दिगंबर जैन मंदिर चन्द्रप्रभ जी दुगार्पुरा, जयपुर में दशलक्षण महापर्व में दिनांक 27 सितंबर ,बुधवार को प्रातः 6.30 बजे मूल नायक श्री 1008 चन्द्रप्रभ भगवान जी के प्रथम अभिषेक शांतिधारा करने का पुण्यार्जन जी सी जैन श्रीमती विशल्या देवी जैन बड़जात्या परिवार ने प्राप्त किया। दश लक्षण महा मण्डल पूजा के सोधर्म इन्द्र इंद्राणी प्रकाश चन्द जैन श्रीमती मनोरमा जैन चांदवाड़ रहे । महा आरती का पुण्यार्जन श्री दिगम्बर जैन मंदिर चन्द्रप्रभु नवयुवक मंडल दुगार्पुरा ने प्राप्त किया। ट्रस्ट के अध्यक्ष प्रकाश चन्द जैन चांदवाड़ एवं मंत्री राजेन्द्र कुमार जैन काला ने बताया कि उत्तम तप धर्म की विधानाचार्य पंडित दीपक शास्त्री के मंत्रोच्चार एवं संगीतकार पवन बड़जात्या एवं पार्टी की मधुर आवाज में उत्तम आकिंचन्य धर्म की पूजा भक्ति भाव से श्रद्धालुओं द्वारा की गई। महाआरती के पश्चात उत्तम आकिंचन्य धर्म पर श्री दिगम्बर जैन श्रमण संस्कृति संस्थान सांगानेर की गरिमा व रीतिका जैन बालिकाओं ने प्रवचन किए। महिला मंडल दुगार्पुरा की अध्यक्ष श्रीमती रेखा लुहाड़िया एवं मंत्री श्रीमती रानी सोगानी ने बताया कि सांस्कृतिक कार्यक्रम में धार्मिक हाऊजी काआयोजन हुआ। सांस्कृतिक कार्यक्रम के मुख्य अतिथि श्रीमती मैना देवी निहाल चंद दोसी एवं सी एस जैन श्रीमती संगीता जैन थे। कमल किशोर श्रीमती प्रेम बड़जात्या परिवार ने दीप प्रज्ज्वलित कर कार्यक्रम का शुभारंभ किया।

मालवीय नगर जैन मंदिर में महिला मंडल द्वारा हुआ नाटक का मंचन

जयपुर. शाबाश इंडिया

मालवीय नगर सेक्टर 10 श्री चंद्र प्रभु दिगंबर जैन मंदिर में दक्ष लक्षण पर्व के पावन अवसर पर दैनिक सांस्कृतिक कार्यक्रम की श्रृंखला में श्री चंद्र प्रभु महिला मंडल द्वारा दो लघु नाटिकाओं का मंचन किया। मंदिर जिनालय है भिक्षालय नहीं एवं मैं कौन दोनों ही नाटक की प्रस्तुति बहुत ही सुंदर तरीके से की गई जिसमें महासमिति के सुरेंद्र पांड्या , पूर्व आईपीएस अनिल जैन, नरेंद्र कुमार जैन बाकलीवाल पर्यवेक्षक मालवीय नगर संभाग, णमोकार जैन एवं निर्मल संघी राजस्थान अंचल के पदाधिकारी मौजूद रहे। उन्होंने इस नाटक की प्रस्तुति को बहुत सराहा। कार्यक्रम की मुख्य संयोजक महिला मंडल अध्यक्ष कल्पना बैद रही एवं अंत में सभी प्रतिभागियों को व्यवस्था समिति की ओर से पुरस्कृत किया गया।

सीमित साधनों से जीवन यापन ही उत्तम आंकिंचन है

सायंकाल मे इन्द्रसभा का हुआ भव्य अयोजन

जयपुर. शाबाश इंडिया। नेमीसागर कालोनी स्थित जैन मंदिर में दसलक्षण महापर्व में उत्तम आंकिचन धर्म की पूजन की गई। इस अवसर पर विधानाचार्य पंडित रमेश शास्त्री ने कहा कि आवश्यकता से अधिक वस्तु का संग्रह दुःख का कारण बनता है। सीमित साधनों से जीवन यापन करना ही उत्तम आंकिंचन है। अध्यक्ष जे के जैन कालाडेरा ने बताया कि सायंकाल मे इन्द्रसभा का अयोजन किया गया, जिसकी प्रस्तुति अजय जैन महुवा वाले द्वारा की गई। कार्यक्रम के पुण्यार्जक संजीव पिंकी कासलीवाल परिवार थे। पूजन स्थापना राजेंद्र सेठी द्वारा की गई। इन्द्रसभा में भगवान के गर्भ तथा जन्म कल्याणक क्रियाओं को दशार्या गया। कार्यक्रम में पूर्व मुख्य न्यायाधीश एवं मानवाधिकार आयोग अध्यक्ष एन के जैन, महावीर शिक्षा परिषद के मंत्री सुनील बक्शी, समाज सेवी विनय सोगानी यथा जैन समाज के गणमान्य व्यक्ति तथा काफी संख्या में श्रद्धालु उपस्थित रहे।

महावीर नगर जैन मंदिर में हुआ भक्तामर अनुष्ठान का आयोजन

जयपुर. शाबाश इंडिया। महावीर नगर जैन मंदिर में जैन महिला मण्डल द्वारा 48 दीपकों से रिद्धि सिद्धि मंत्रो द्वारा संगीतमय भक्तामर स्तोत्र का आयोजन किया गया । प्रसिद्ध गायक अशोक गंगवाल एंड पार्टी ने भव्य प्रस्तुति दी। मंत्री रीना पांड्या ने बताया कार्यक्रम की मुख्य अतिथि श्रीमति मृदुला पांड्या, श्रीमति शशि सोगानी और श्रीमति शशि सेठी थी । कार्यक्रम संयोजक श्रीमति नवरत माला जैन , उषा जैन, अनिला गंगवाल , ज्योति भौंसा और रेणु बाकलीवाल थी। कार्यक्रम के अन्त में अध्यक्ष श्रीमती सुशीला गोदिका ने समस्त कार्यकारिणी सदस्यों और संयोजकों और अतिथियों का धन्यवाद ज्ञापित किया।

जवाहर नगर जैन मंदिर में नृत्य नाटिका जंबू स्वामी का वैराग्य का मंचन

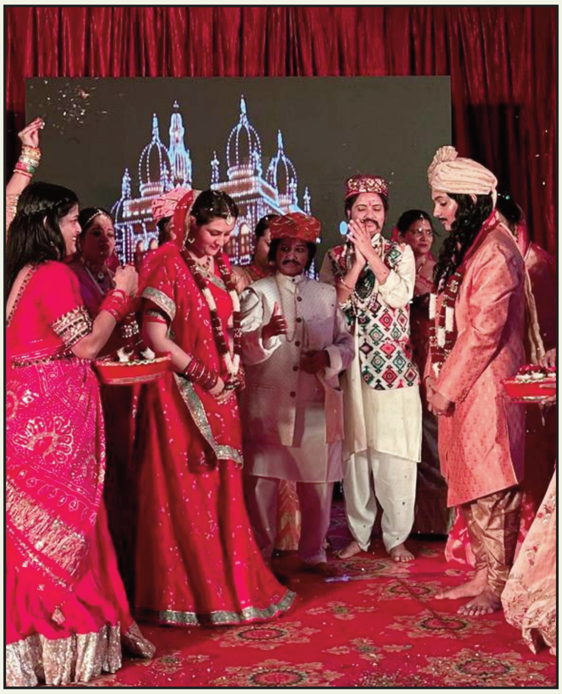

जयपुर. शाबाश इंडिया। जवाहर नगर स्थित पार्श्वनाथ दिगंबर जैन मंदिर में दस लक्षण पर्व के उपलक्ष में आयोजित हो रहे कार्यक्रम की श्रंखला में उत्तम त्याग धर्म के अवसर पर नृत्य नाटिका जम्बू स्वामी का वैराग्य का मंचन किया गया। यह जानकारी देते हुए मंदिर समिति के अध्यक्ष महेंद्र बक्शी और सचिव अजय गोधा ने बताया कि इस नाटक में बताया गया कि जैन धर्म में वर्तमान काल के अंतिम केवली जम्मू स्वामी ने शादी के दिन 8 रानियों को छोड़कर दीक्षा अंगीकार कर ली थी। उन्हें रास्ते में एक डाकू और 500 चोर मिलते हैं। वे उन्हें ये छोड़कर दीक्षा का मार्ग दिखाते हैं। उनकी बातों से चोर-डाकुओं की आंखें भी खुल जाती है और वे दीक्षा ग्रहण कर लेते हैं। महिला मंडल की अध्यक्षा चंद्रकांता गोधा और सरला जैन ने सभी अतिथियों का स्वागत किया। जैन मंडल के अध्यक्ष प्रदीप जैन और चिराग जैन भी इस अवसर पर मौजूद थे। कार्यक्रम की मुख्य अतिथि मृदुला रानी जैन ,आशा रानी जैन और राजरानी जैन थे ।

|| श्री आदिनाथ नमः ||

स्नेहील आमंत्रण

|| जय जिनेन्द्र ||

दशलक्षण तपस्या व्रती

मेघा प्रशांत सेठी

स्नेही स्वजन

जय जिनेन्द्र,

श्री वीर प्रभु की अनुकम्पा हमारी पौत्रवधू मेघा धर्मपत्नी प्रशांत सेठी ने इस बार दशलक्षण व्रत धारण किया है। व्रती की व्रत साधना सफलता पूर्वक चल रही है।

सानिध्य : ब्रह्चारिणी पूर्णिमा दीदी, जय श्री दीदी

शुक्रवार , 29 सितम्बर 2023

समय : प्रातः 8:30 से

स्थान : श्री आदिनाथ दिगंबर जैन मंदिर विवेक विहार

में आयोजित व्रती मेघा के महा पारणा समारोह एवं प्रिती भोज में आप सपरिवार आमंत्रित हैं ।

हमारा विनम्र अनुरोध है इस अवसर पर पधारकर व्रती को आशीर्वाद प्रदान करें ।

-: अनुरोध :-

त्रिलोकचंद - आची देवी, दिलीप - सरिता, दर्शन, श्रेयांश

समस्त सेठी परिवार, किशनागंज - जयपुर

ऊंचाई पर पहुंचने के लिए हमें खाली होना आवश्यक है: विहसंत सागर

प्रतिभाशाली बच्चों का हुआ बहुमान

मनोज नायक. शाबाश इंडिया

डबरा। आकिचन्य धर्म आत्मा की उस दशा का नाम है जहां पर बाहरी सब छूट जाता है किंतु आंतरिक संकल्प विकल्पों की परिणति को भी विश्राम मिल जाता है। बाहरी परित्याग के बाद भी मन में ''मैं'' और 'मेरे पन' का भाव निरंतर चलता रहता है, जिससे आत्मा बोझिल होती है और मुक्ति की ऊर्ध्वगामी यात्रा नहीं कर पाती। जिस प्रकार पहाड़ की चोटी पर पहुंचने के लिए हमें भार रहित हल्का होना जरूरी होता है उसी प्रकार सिद्धालय की पवित्र ऊंचाइयां पाने के लिए हमें अकिंचन, एकदम खाली होना आवश्यक है। यह आत्मा,संकल्प, विकल्प रूप कर्तव्य भावों से संसार सागर में डूबती रहती है। परिग्रह का परित्याग कर परिणामों को आत्मकेंद्रित करना ही अकिंचन धर्म की भावधारा है। जहां पर भीड़ है, वहांपर आवाज, आकुलता और अशांतिहै किंतु एकाकी एकत्व के जीवन में न कोई आवाज है औरन कोई आकुलता और न अशांति।हम जहां पर जी रहे हैं वह कर्तव्य तो करना ही है किंतु यथार्थता का बोध हमें रहना चाहिए। उक्त विचार मेडिटेशन गुरु विहसंत्वसागर जी महाराज ने जैन मंदिर डबरा में धर्मसभा को संबोधित करते हुए व्यक्त किए। रात्रि में जैन मिलन स्वतंत्र डबरा द्वारा जैन समाज के मेधावी छात्र छात्राओं का प्रतिभा सम्मान समारोह का कार्यक्रम किया गया जिसमें वर्ष 2023 में एम बी एस ,सीए, 10th क्लास, 12th क्लास एवं zee मैंस के प्रतिभाशाली बच्चों का तिलक चंदन लगाकर एवं सम्मान पट्टीका और मोमेंटो देकर सम्मान किया गया एवं मेडिटेशन गुरु उपाध्याय श्री विहसंत सागर मुनिराज ने सभी प्रतिभाशाली छात्र एवं छात्राओं को आशीर्वाद दिया सम्मान में मुख्य अतिथि आरोग्य में वर्षा योग समिति के रामजीलाल जैन, विनोद जैन सिंघई, कोमलचंद जैन, नरेंद्र जैन नीरू कार्यक्रम संयोजक अति वीर दीपक जैन स्वराज, वीर मनोज जैन एकांत, अध्यक्ष अति वीर राजू जैन कपड़े वाले, मंत्री वीर प्रेमचंद जैन एस बी आई, कोषाध्यक्ष अतिबिर दिनेश कुमार जैन एडवोकेट, अतिवीर रितेश जैन सह मंत्री वीर अमित जैन एमपी ऑनलाइन, शुभम जैन दीपू, चंद्रशेखर जैन रानू, अखिलेश जैन रानू, शीतल जैन भितरवार, महेंद्र जैन पैथोलॉजी, आशीष जैन आदिनाथ फास्ट फूड, हेमंत जैन डायमंड, नवीन कुमार जैन सिद्धांत, राजेंद्र जैन महाकाल, शुभम जैन , प्रांकुल जैन, आदि जैन मिलन स्वतंत्र डबरा के सदस्यगण उपस्थित थे आरोग्यमय वर्षा योग समिति द्वारा लकी ड्रा में विजेताओं को पुरस्कार देकर सम्मान किया गया।

महिमा भक्तामर की नृत्य नाटिका का मंचन

जयपुर. शाबाश इंडिया। दस लक्षण महापर्व के अवसर पर श्री पारसनाथ दिगंबर जैन मंदिर कीर्ति नगर टोंक रोड जयपुर में महिमा भक्तामर की नृत्य नाटिका का मंचन हुआ। नाटिका में समाज के बच्चों एवं महिलाओं के द्वारा महास्त्रोत भक्तामर की रचना एवं 48 काव्यो की भावपूर्ण प्रस्तुति नृत्य नाटिका के द्वारा दी गई। कार्यक्रम की संयोजिका पूनम तिलक श्रुति जैन एवं नीतू जैन थे । सांस्कृतिक मंत्री राजेंद्र पाटनी ने बताया यह कार्यक्रम अत्यंत अद्भुत एवं अनोखा था इसके द्वारा आचार्य मानतुंग की भक्ति की शक्ति को दशार्या गया । समाज के बच्चों एवं महिलाओं के द्वारा महास्त्रोत भक्तामर की रचना एवं 48 काव्यो की भावपूर्ण प्रस्तुति नृत्य नाटिका के द्वारा दी गई।

जैन मंदिर विवेक विहार में नाटक जैसी करनी है वैसी भरनी का हुआ मंचन

जयपुर. शाबाश इंडिया। श्री आदिनाथ दिगंबर जैन मंदिर विवेक विहार में बुधवार सुबह श्री जी के अभिषेक के बाद में पूजा अर्चना का कार्यक्रम हुआ। शाम को अनेक सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित किए गए । समाज के सचिव नरेश जैन ने बताया कि श्रीजी की आरती के साथ भक्ति में कार्यक्रम की शुरूआत हुई आरती के पुण्यार्जक परिवार लता, धीरज,कविता बिदायंका का माला दुपट्टा पहनाकर अभिनंदन किया गया । इस मौके पर पूर्व आरती कर्ता परिवार त्रिलोकमती, अनिल जैन आईएएस, स्वाती ,अरविंद जैन जैन एवं पारसमल,ललिता, प्रदीप, निशा छाबड़ा परिवार का मोमेंट देकर अभिनंदन किया गया। आरती के पश्चात ब्रह्मचारिणी पूर्णिमा दीदी जय श्री दीदी ने प्रतिक्रमण कराया । दस लक्षण पर्व संयोजक दीपक सेठी ने बताया कि कार्यक्रम का दीप प्रजलन अरुण पाटनी, अंगूरी पाटनी ने किया । सांस्कृतिक कार्यक्रम में प्रथम चरण में मंगलाचरण की प्रस्तुति हुई । इसके बाद में महिला मंडल की ओर से लघु नाटक जैसी करनी है वैसी भरनी का नाट्य मंचन किया गया । लघु नाटक के पुरस्कार के पुण्यार्जक परिवार अरुण अंगूरी पाटनी एवं मदनलाल, मनोज, मोना कासलीवाल परिवार का महिला मंडल की ओर से स्वागत किया गया । लघु नाटक मंचन में प्रस्तुति देने वाले कलाकार मोनिका पाटनी, संता पाटनी, निवेदिता पाटनी, नीलू छाबड़ा ,नेहा पाटनी कविता बिंदायका व सभी बच्चों का महिला मंडल ने आभार व्यक्त किया ।